हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 11 अक्टूबर 2026

9 राम जन्म और ताड़का वध का मंचन देख दर्शक...



9 जिले में निकलेगी नशा मुक्त भारत यात्रा



बंदरों का आतंक, आवारा पशुओं से जल्द मिलेगी राहत, नपा ने दोबारा जारी किया टेंडर

पहली बार किसी एजेंसी ने नहीं लिया था टेंडर प्रक्रिया में भाग, दूसरी बार भी एजेंसी नहीं मिली तो दरों की समीक्षा के लिए उच्च अधिकारियों से लिया जाएगा मार्गदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

शहर में बंदरों के बढ़ते आतंक और सड़कों पर खुलेआम घूम रहे बेसहारा पशुओं की समस्या से परेशान शहरवासियों के लिए राहत की उम्मीद जगी है। शहर की इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए नगरपालिका महेंद्रगढ़ ने 1000 बंदरों और 1000 बेसहारा पशुओं को पकड़ने के लिए दोबारा टेंडर आमंत्रित किया है। पहली बार टेंडर प्रक्रिया में किसी भी एजेंसी के भाग नहीं लेने के कारण नगरपालिका को दोबारा निविदा जारी करनी पड़ी है। फिलहाल टेंडर प्रक्रिया जारी है और जल्द ही इसे खोले जाने की संभावना है। नगरपालिका प्रशासन का प्रयास है कि नियमानुसार एजेंसी का चयन कर शहर में बंदरों और बेसहारा पशुओं की समस्या का समाधान करवाया जाए, ताकि आमजन को रोजाना होने वाली परेशानियों से निजात मिल सके। शहर के विभिन्न मोहल्लों, बाजारों और सार्वजनिक स्थानों पर बंदरों की बढ़ती संख्या लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। कई स्थानों पर बंदरों के झुंड दिखाई देते हैं, जिससे लोगों को अपने दैनिक कार्यों के दौरान सतर्क रहना पड़ता है। वहीं, सड़कों और बाजारों में घूमने वाले बेसहारा पशुओं के कारण यातायात व्यवस्था भी प्रभावित होती है। इन परिस्थितियों में राहगीरों, दुकानदारों और वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। नगरपालिका द्वारा इन समस्याओं को दूर करने के लिए बंदरों और बेसहारा पशुओं को पकड़ने की योजना पर काम किया जा रहा है।

■ 1000 बंदरों और 1000 बेसहारा पशुओं को पकड़ने की तैयारी

600 रुपये प्रति पशु की निर्धारित दर बनी चुनौती

बंदरों और बेसहारा पशुओं को पकड़ने के लिए नगरपालिका की ओर से लगभग 600 रुपये प्रति पशु की निर्धारित दर रखी गई है। इसी दर पर एजेंसियों की कम रुचि को पहली बार टेंडर में किसी भी एजेंसी के शामिल नहीं होने का प्रमुख कारण माना जा रहा है। निर्धारित राशि पर काम करने में एजेंसियों की रुचि कम होने के कारण नगरपालिका के लिए इस कार्य को शुरू करवाना चुनौती बना हुआ है।

निविदा पर टिकी हैं शहरवासियों की नजरें

नगरपालिका द्वारा बंदरों और बेसहारा पशुओं को पकड़ने के लिए पहले भी टेंडर जारी किया गया था, लेकिन निर्धारित प्रक्रिया के दौरान किसी भी एजेंसी ने इसमें भाग नहीं लिया। इसके चलते टेंडर प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ सकी। अब नगरपालिका ने दोबारा टेंडर आमंत्रित किया है, ताकि इच्छुक एजेंसियां इसमें भाग ले सकें और निर्धारित नियमों के अनुसार काम करने वाली एजेंसी का चयन किया जा सके। नगरपालिका के सामने सबसे बड़ी चुनौती निर्धारित दरों पर एजेंसी की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। अधिकारियों के अनुसार, टेंडर प्रक्रिया पूरी होने और एजेंसी का चयन होने के बाद ही बंदरों तथा बेसहारा पशुओं को पकड़ने का काम शुरू करवाया जा सकेगा। ऐसे में अब शहरवासियों की नजर दोबारा आमंत्रित किए गए टेंडर पर टिकी हुई है।



महेंद्रगढ़। शहर में खड़े बेसहारा पशु।

खबर संक्षेप

22-23 को चंडीगढ़ जाएंगे रिटायर्ड कर्मचारी

नारनौल। रिटायर्ड कर्मचारी संघ हरियाणा ने संगठन की सदस्य संख्या 12 हजार से बढ़ाकर 30 हजार करने का लक्ष्य तय किया है। वहीं 22-23 अक्टूबर को प्रदेश के रिटायर्ड कर्मचारियों की लंबित समस्याओं के समाधान के लिए राज्य प्रतिनिधिमंडल चंडीगढ़ जाएगा। 12 दिसंबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में होने वाली अखिल भारतीय रैली में प्रदेश से 1500 रिटायर्ड कर्मचारियों को शामिल करने का भी निर्णय लिया गया है।

मिड डे मील कार्यकर्ता यूनियन की बैठक आज

नारनौल। मिड डे मील कार्यकर्ता यूनियन हरियाणा सम्बंधित एआईयूटीयूसी की ब्लॉक प्रधान माया ने बताया कि रविवार को मिड डे मील कर्मियों की बैठक प्रातः 10 बजे पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में होगी। जिसमें 26 अक्टूबर महापंचायत में शामिल होने की रणनीति तय की जाएगी। नांगल चौधरी ब्लॉक प्रधान लक्ष्मी देवी ने बताया कि बैठक को एआईयूटीयूसी जिला प्रधान मास्टर सुबेसिंह सम्बोधित करेंगे।

सीआईए ने हेरोइन सहित आरोपित पकड़ा

नारनौल। सीआईए ने हेरोइन (चिट्टा) सहित एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान अनुराग निवासी नई सराय के रूप में हुई है। आरोपित से बरामद नशीले पदार्थ का पॉलीथिन सहित कुल वजन 8.06 ग्राम पाया गया। इस संबंध में थाना शहर में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। डीएसपी मुख्यालय भारत भूषण ने बताया कि नौ अक्टूबर को सीआईए गश्त के दौरान आजाद चौक क्षेत्र में मौजूद थी, तभी उसे आरोपी के बारे में सूचना मिली थी।

जुआ खेलते तीन आरोपित गिरफ्तार

नारनौल। सीआईए ने नसीबपुर क्षेत्र में जुआ खेल रहे तीन व्यक्तियों से 46100 रुपये व 52 ताश के पत्ते बरामद किए हैं। इस संबंध में थाना शहर में जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर तीनों आरोपितों को जांच में शामिल किया गया है। डीएसपी मुख्यालय भारत भूषण ने बताया कि काबू किए गए लोगों की पहचान देवेंद्र निवासी नसीबपुर, वीरेंद्र निवासी नसीबपुर व बलजीत निवासी मोहल्ला खरखड़ी है।

श्री कृपा सेवा समिति ने मनाई अग्रसेन जयंती

नारनौल। महाराजा अग्रसेन जयंती के अवसर पर श्रीकृपा सेवा समिति की ओर से इंदिरा कॉलोनी स्थित स्लम एरिया के बच्चों के बीच विशेष कार्यक्रम आयोजित कर सेवा, सहयोग और सामाजिक समरसता का संदेश दिया गया। कार्यक्रम की शुरूआत महाराजा अग्रसेन के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित एवं माल्यार्पण कर श्रद्धापूर्वक नमन के साथ हुई। इस दौरान बच्चों को महाराजा अग्रसेन के जीवन, उनके आदर्शों और समाज के प्रति उनके योगदान से परिचित कराया गया।

मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग को जिलेभर में प्रदर्शन और नारेबाजी

दिल्ली कूच से पहले ही कांग्रेस नेता डिटेन कई संगठनों ने किया प्रदर्शन, सुरक्षा कड़ी



नारनौल। प्रदर्शन करते संघर्ष मंच के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा की मांग को लेकर देशभर में चल रहे आंदोलन के समर्थन में शनिवार को विपक्षी दलों, जन संघर्ष मंच हरियाणा और कई संगठनों के सदस्यों ने प्रदर्शन किया। इससे पहले जिला कांग्रेस कमेटी महेंद्रगढ़ अध्यक्ष सत्यवीर यादव को शनिवार की सुबह से ही उनके निजी आवास पर पुलिस द्वारा नजरबंद व डिटेन कर लिया गया है। वे समर्थकों के साथ दिल्ली रवाना होने जा रहे थे। जिलेभर में धरने और प्रदर्शनों को देखते हुए शहर में सुरक्षा चौबंद रही। हर आने जाने वाले पर कड़ी निगरानी रखी गई। दूसरी तरफ, जन संघर्ष मंच हरिया ने एक दिवसीय धरना दिया गया। डॉ. भीमराव आंबेडकर की प्रतिमा स्थल पर आयोजित धरने की अध्यक्षता मंच के जिला संयोजक कृष्ण कुमार तोबड़ा ने की, जबकि संचालन कामरेड सुभाष चंद्र एडवोकेट ने किया। धरने को जन संघर्ष मंच हरियाणा के प्रांतीय प्रवक्ता कामरेड सोमनाथ, ईश्वर सिंह सुठानी, जयनारायण मैनेजर, सुरेश बौद्ध, पूर्व प्राचार्य अमर सिंह निमौरिया, डॉ. राजवती, लाजपत, प्रेम यादव, सिंहराज यादव एडवोकेट, सेदूराम नंबरदार, प्रदीप घनियार, प्रकाश चंद सामाजिक कार्यकर्ता, धर्मेंद्र पहलवान सहित अन्य वक्ताओं ने संबोधित किया। वक्ताओं के अनुसार जन संघर्ष मंच हरियाणा की कविता विद्रोही और पूजा विद्रोही को दिल्ली पुलिस ने कनॉट प्लेस से हिरासत में लिया है। उन्होंने दावा किया कि अन्य आंदोलनकारियों को भी बसों में बैठाकर इधर-उधर ले जाया गया तथा जंतर-मंतर क्षेत्र को घेर दिया गया। वक्ताओं ने कहा कि लोकतंत्र में अपनी मांगों को लेकर शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना नागरिकों का संवैधानिक अधिकार है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार और पुलिस द्वारा आंदोलनकारियों की आवाज दबाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि चुनावी प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं और चुनाव आयोग की भूमिका के विरोध में देशभर में आंदोलन चल रहा है।

आंदोलन को दबाया नहीं जा सकता

मंच के नेताओं ने कहा कि पुलिस और सरकार के दबाव के बावजूद आंदोलन को दबाया नहीं जा सकता। उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और गिरफ्तारी की मांग दोहराते हुए कहा कि लोकतांत्रिक अधिकारों पर किसी भी प्रकार का हमला स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने पुलिस द्वारा हिरासत में लिए गए आंदोलनकारियों और उनके समर्थकों को तुरंत रिहा करने की मांग भी की। वक्ताओं ने कहा कि मौजूदा राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था गहरे अंतर्विरोधों से गुजर रही है। मेहनतकश जनता के अधिकारों पर हमले, लोकतांत्रिक संस्थाओं के कथित क्षरण और जन आंदोलनों पर कार्रवाई को उन्होंने व्यापक संकट के लक्षण बताया। उन्होंने शहीद भगत सिंह के विचारों से प्रेरणा लेते हुए मजदूरों और मेहनतकश लोगों को संगठित कर शोषण, दमन और तानाशाही के खिलाफ संघर्ष तेज करने का आह्वान किया। जन संघर्ष मंच के नेताओं ने कहा कि मोदी सरकार की नीतियों के विरोध, मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे और गिरफ्तारी की मांग तथा लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए हरियाणा के विभिन्न हिस्सों में विरोध प्रदर्शन जारी रखे जाएंगे।

जिला कांग्रेस अध्यक्ष नजरबंद, घर पर पहरा



महेंद्रगढ़। जिला कांग्रेस कमेटी महेंद्रगढ़ अध्यक्ष सत्यवीर यादव को शनिवार की सुबह से ही उनके निजी आवास पर पुलिस द्वारा नजरबंद व डिटेन कर लिया गया है। पुलिस प्रशासन ने सुबह 10 बजे से ही सत्यवीर यादव को घर में ही नजरबंद कर दिया। अध्यक्ष सत्यवीर यादव ने बताया कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर दिल्ली मार्च का कार्यक्रम प्रस्तावित था, जिसमें जिला कांग्रेस अध्यक्ष सत्यवीर यादव को अपनी पूरी जिला कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के साथ दिल्ली के लिए रवाना होना था। इसी को रोकने के लिए सरकार के इशारे पर पुलिस ने यह अलोकतांत्रिक कदम उठाया है। उन्होंने बताया कि जैसे ही जिला अध्यक्ष के नजरबंद होने की खबर कार्यकर्ताओं को लगी, बड़ी संख्या में जिला कार्यकारिणी के पदाधिकारी, ब्लॉक अध्यक्ष एवं सैकड़ों कार्यकर्ता श्री सत्यवीर यादव के आवास पर उनसे मिलने पहुंचे। मौके पर स्थिति तनावपूर्ण रही। पुलिस ने लगभग 40 से 50 पुलिस जवानों और 8 से 10 गाड़ियों के साथ सत्यवीर यादव के घर की घेराबंदी कर रखी है। यह भाजपा सरकार की हताशा और तानाशाही का स्पष्ट प्रमाण है।

वोट चोरी के मुद्दे पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं को रोकने की निंदा

मंडी अटेली। दिल्ली में वोट चोरी के मुद्दे पर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार गुप्ता के इस्तीफे की मांग को लेकर आयोजित धरना-प्रदर्शन में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को जाने से रोकने और गिरफ्तार करने के आरोपों पर अटेली ब्लॉक अध्यक्ष सुमेर सिंह यादव ने निंदा की है। सुमेर सिंह यादव ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में इंडिया गठबंधन लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के लिए शांतिपूर्ण तरीके से अपनी आवाज उठा रहा है। चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाना संवैधानिक अधिकार है कोई अपराध नहीं। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस ने कांग्रेस जिला अध्यक्ष सत्यवीर झुकिया एवं महिला जिला अध्यक्ष राजवती को हाउस अरेस्ट किया है। वहीं अन्य पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को भी गिरफ्तार करने की तैयारी की जा रही है। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्रवाई लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। सुमेर सिंह यादव ने कहा कि कांग्रेस कार्यकर्ताओं का मनोबल कमजोर नहीं होगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं से शांतिपूर्ण प्रदर्शन में भाग लेने के लिए अधिक से अधिक संख्या में दिल्ली पहुंचने की अपील की है।

किसानों को पर्याप्त बिजली-पानी मुहैया करवाएगी सरकार

नारनौल। विधायक एवं पूर्व मंत्री ओमप्रकाश यादव ने रबी की फसल की बिजाई के सीजन को ध्यान में रखते हुए संबंधित अधिकारियों से दूरभाष पर बातचीत की। उन्होंने चंडीगढ़ स्थित उच्च अधिकारियों से भी संपर्क कर किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने का आग्रह किया। विधायक ने बताया कि सिंचाई विभाग और बिजली निगम अधिकारियों ने उन्हें आश्वस्त किया है कि रबी की फसल की बिजाई के लिए क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में पानी और बिजली उपलब्ध करवाई जाएगी, ताकि किसानों को खेती के कार्यों में किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

जिले में 1454 मामले लंबित 28 अक्टूबर तक होगा निपटारा

नारनौल। विशेष गहन पुनरीक्षण के तहत जिला प्रशासन नोटिस और सुनवाई से जुड़े मामलों के समयबद्ध निपटारे को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहा है। जिला निर्वाचन कार्यालय का लक्ष्य है कि छह नवंबर को प्रकाशित होने वाली अंतिम मतदाता सूची में हर पात्र नागरिक का नाम शामिल हो। उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अनुपमा अंजली ने बताया कि इसके लिए सात से नौ अक्टूबर तक जिले में विशेष शिविर लगाए गए। फिलहाल जिले में 1454 सुनवाई मामले लंबित हैं, जिनका निपटारा 28 अक्टूबर तक किया जाना है।

बेटे के लिए किए जूते ऑर्डर, पार्सल में निकले फटे-पुराने कपड़े

नारनौल। ऑनलाइन शॉपिंग करना एक व्यक्ति को महंगा पड़ गया। व्यक्ति को मंगाए गए सामान की जगह अन्य सामान भेज दिया। अब पीड़ित व्यक्ति इसकी शिकायत कंज्यूमर फोरम में कर कंपनी पर कार्रवाई करने की तैयारी में है। शहर में ऑनलाइन मंगाए गए सामान की जगह दूसरी चीजें मिलने का मामला सामने आया है। शहर के मोहल्ला पीरआगा निवासी रविंद्र कुमार ने ऑनलाइन अपने बेटे के लिए जूते ऑर्डर किए थे, लेकिन पार्सल खोलने पर डिब्बे में जूतों की जगह फटे-पुराने कपड़े मिले। रविंद्र कुमार पंजाब नेशनल बैंक में कार्यरत हैं। उन्होंने कंपनी प्रबंधन से मामले में कार्रवाई करने और रिफंड देने की मांग की है। रविंद्र कुमार के अनुसार उन्होंने त्योहार के मौके पर अपने बेटे के लिए जूते मंगवाए थे। डिलीवरी मिलने के बाद जब उन्होंने पार्सल खोला, तो उसमें जूते नहीं मिले। इसके बजाय डिब्बे में फटे-पुराने कपड़े भरे हुए थे।

जमीन विवाद में महिला की हत्या, पति ने परिजन व रिश्तेदारों पर लगाया आरोप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

सतनाली थाना क्षेत्र के गांव ढाणी कुम्हारान में महिला का खून से लथपथ शव बरामद हुआ है। मृतका की पहचान शकुन्तला पत्नी मीरसिंह निवासी ढाणी कुम्हारान के रूप में हुई है। पुलिस ने पति की शिकायत पर हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार मृतका के पति मीरसिंह ने पुलिस को दी गई शिकायत में बताया कि वह और उनकी पत्नी मजदूरी का काम करते हैं। शुक्रवार की रात खाना खाने के बाद उनकी पत्नी खेत में सोने चली गई थीं। अगले दिन शनिवार की सुबह करीब छह बजे पड़ोसी ने सूचना दी कि गांव के सरपंच और अन्य लोग उनके घर के पास मौजूद हैं। जब मीरसिंह ने घर पहुंचकर गेट खोला तो देखा कि उनकी पत्नी शकुन्तला आंगन में मुंह के बल पड़ी हुई थीं और उनके सिर से भारी मात्रा में खून बह रहा था।

पड़ोसियों ने किसी को भागते देखा था

रात को पड़ोसियों ने घर के पास झगड़े की आवाजें सुनी थीं। जब वे देखने पहुंचे तो घर की बत्तियां बंद थीं और एक व्यक्ति घर से निकलकर भागता हुआ दिखाई दिया, जो अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गया। मृतक महिला के पति ने आरोप लगाया है कि उनके परिजनों/रिश्तेदारों के साथ करीब पांच-छह माह पहले जमीन बंटवारे को लेकर मारपीट और विवाद हुआ था। आरोप है कि उस समय भी आरोपितों ने जान से मारने की धमकी दी थी और इसी रंजिश के चलते उनकी पत्नी की चोट मारकर हत्या की गई है। घटना की सूचना मिलते ही सतनाली थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए।

कोटिया की बेटी शीतल यादव ने एचसीएस में हासिल की 26वीं रैंक



महेंद्रगढ़। कोटिया गांव की बेटी शीतल यादव ने हरियाणा सिविल सर्विस परीक्षा में 26वां रैंक हासिल कर गांव, परिवार और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। उनकी सफलता से गांव में खुशी की लहर है। शीतल यादव माता सुमरत देवी और पिता हरिपाल की पुत्री हैं। उनके माता-पिता दोनों सरकारी शिक्षक हैं। शीतल ने प्राथमिक शिक्षा गाहड़ा के सरकारी विद्यालय से प्राप्त की तथा उच्च शिक्षा पंचकूला और चंडीगढ़ से हासिल की। पढ़ाई में शुरू से ही होनहार शीतल ने स्नातक में विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त किया था। वह एचसीएस परीक्षा में इंटरव्यू स्तर तक भी पहुंच चुकी हैं। शीतल के स्वर्गीय दादा दयाराम हमेशा उन्हें पढ़-लिखकर बड़ा अधिकारी बनने के लिए प्रेरित करते थे। एचसीएस में सफलता हासिल कर शीतल ने दादा के सपने को साकार किया है।

आस्था | कलश स्थापना का मुहूर्त प्रातः 6:25 से 10:15 बजे तक

शारदीय नवरात्र आज से, श्रद्धालुओं में उत्साह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शक्ति उपासना का पावन पर्व शारदीय नवरात्र 11 अक्टूबर रविवार से प्रारंभ होंगे तथा 20 अक्टूबर को संपन्न होंगे। नवरात्र के दौरान श्रद्धालु मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा-अर्चना कर सुख-समृद्धि, शांति और मंगल की कामना करेंगे। ज्योतिषाचार्य आचार्य क्रांति निर्मल शास्त्री ने बताया कि नवरात्र के प्रथम दिन कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त प्रातः 6:25 से 10:15 बजे तक रहेगा। इसके अतिरिक्त अभिजित मुहूर्त प्रातः 11:50 से दोपहर 12:35 बजे तक रहेगा।

कलश स्थापना की विधि बताते हुए आचार्य शास्त्री ने कहा कि सर्वप्रथम पूजा स्थल की स्वच्छता कर मां दुर्गा का स्मरण करें। चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर मां भगवती की प्रतिमा स्थापित करें। मिट्टी के पात्र में जौ बोकर उसके ऊपर जल से भरा कलश स्थापित करें। कलश पर रोली से स्वस्तिक बनाएं, उसमें आम या अशोक के पत्ते लगाएं तथा नारियल को लाल वस्त्र में लपेटकर कलश के ऊपर रखें। इसके बाद गणेश जी, कलश और मां दुर्गा का विधिपूर्वक पूजन कर नवरात्र व्रत एवं साधना का संकल्प लें। श्रद्धालु अपनी परंपरा के अनुसार अखंड ज्योत प्रज्वलित कर दुर्गा सप्तशती का पाठ भी कर सकते हैं।

श्रद्धालुओं को सदाचार अपनाने चाहिए



ज्योतिषाचार्य आचार्य क्रांति निर्मल शास्त्री ने बताया कि धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस वर्ष माता रानी का आगमन हाथी पर माना जा रहा है। हाथी को सुख-समृद्धि, शांति और ऐश्वर्य का प्रतीक माना जाता है। नवरात्र के नौ दिन श्रद्धालुओं को सात्विक जीवन, संयम, सेवा और सदाचार अपनाने चाहिए। मां भगवती की आराधना से मन में सकारात्मक ऊर्जा और समाज में सद्भाव का संदेश मिलता है।

बाजारों में लौटेगी रौनक

रविवार को नवरात्र आरम्भ होने के साथ साथ अब बाजारों में रौनक भी लौट आएगी। दुकानदार भी इसी दिन का इंतजार कर रहे थे। महावीर चौक से लेकर आजाद चौक तक दुकानदारों ने दुकान सजा ली है। दुकानदारों को उम्मीद है कि इस बार नवरात्र और फिर दीपावली पर्व पर ग्राहक जमकर खरीददारी करेंगे। इसी बात को ध्यान में रखते हुए दुकानदारों ने सामान भी भर लिया है। वहीं बस स्टैंड, रेवाड़ी रोड, महावीर चौक, महेंद्रगढ़ रोड व सिंघाना रोड पर नवरात्र पर्व का सामान की रेहड़ी व दुकान सजी दिखाई दी।

कैशलेस हेल्थ स्कीम : पेंशनभोगियों को जागरूक करने व कार्ड बनवाने के निर्देश

■ ट्रेजरी और सहायक ट्रेजरी अफसरों को निर्देश पत्र जारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा सरकार के खजाना एवं लेखा विभाग के पेंशन वितरण प्रकोष्ठ ने राज्य के सभी पेंशनभोगियों और पारिवारिक पेंशनभोगियों को 'कैशलेस कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थ केयर' योजना का लाभ पहुंचाने के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश जारी किया है। विभाग ने पाया है कि ई-पेंशन प्रणाली के तहत पेंशन प्राप्त करने वाले पात्र पेंशनभोगियों की तुलना में अभी तक काफी कम संख्या में ही हेल्थ कार्ड जनरेट हो पाए हैं। इसी विषय को गंभीरता से लेते हुए पेंशन वितरण प्रकोष्ठ के संयुक्त निदेशक ने प्रदेश के सभी ट्रेजरी अधिकारियों और सहायक ट्रेजरी अधिकारियों को निर्देश पत्र जारी किया है। पत्र में स्पष्ट किया गया है कि खजाना या उप-खजाना कार्यालयों में आने वाले सभी पेंशनभोगियों और पारिवारिक पेंशनभोगियों को इस योजना और इसके फायदों के प्रति जागरूक किया जाए। साथ ही आयुष्मान भारत पोर्टल के माध्यम से कार्ड बनाने और पंजीकरण प्रक्रिया के लिए आवश्यक दस्तावेजों की जानकारी देकर उनका मार्गदर्शन किया जाए।

ट्रेजरी स्तर पर विशेष शिविर लगेंगे

विभाग ने विशेष रूप से बुजुर्ग और जरूरतमंद पेंशनभोगियों की सहायता करने पर जोर दिया है। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे ट्रेजरी और सब-ट्रेजरी स्तर पर विशेष शिविर (विशेष अभियान) आयोजित करें, ताकि पेंशनभोगियों को आमंत्रित कर उनके सीसीएचएफ कार्ड मौके पर ही बनाए जा सकें। गौरतलब है कि हरियाणा सरकार ने नियमित कर्मचारियों, पेंशनभोगियों और उनके आश्रितों के लिए स्वास्थ्य विभाग की सात जून की अधिसूचना के तहत इस कैशलेस स्वास्थ्य सुविधा योजना को लागू किया था। अब सरकार का प्रयास है कि शत-प्रतिशत पात्र पेंशनभोगी इस योजना का लाभ उठाने के लिए अपने कार्ड बनवा लें।

एक पन्ने की वित्तीय योजना से बिखरे पैसे को दें सही दिशा

▶▶ कमाई आते ही तय करें किस हिस्से से खर्च, सुरक्षा, कर्ज और निवेश ▶▶ छोटी लेकिन स्पष्ट योजना लंबे समय में बना सकती है बड़ा कोष ▶▶ बीमा, आपातकालीन निधि, कर्ज और निवेश का तय करें क्रम ▶▶ हर महीने आय आते ही पैसा अपने लक्ष्य के अनुसार ही करें आवंटित

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

कमाई अच्छी होने के बावजूद कई लोगों की आर्थिक स्थिति इसलिए मजबूत नहीं हो पाती, क्योंकि उनका पैसा अलग-अलग जगह बिखरा रहता है। किसी बैंक खाते में कुछ रकम, कहीं बीमा पॉलिसी, क्रेडिट कार्ड का बकाया, किसी म्यूचुअल फंड में छोटी-सी राशि और थोड़ी बचत घर में... लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि कुल संपत्ति कितनी है और किस लक्ष्य के लिए कितना पैसा जमा किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में जरूरत निवेश के नए विकल्प तलाशने की नहीं, बल्कि पहले से मौजूद पैसों को व्यवस्थित करने की होती है। इसके लिए जरूरी नहीं कि कोई जटिल वित्तीय योजना बनाई जाए। एक पन्ने पर आय, खर्च, कर्ज, सुरक्षा और निवेश की पूरी तस्वीर लिखना भी काफी मददगार हो सकता है। इस योजना का मकसद यह तय करना है कि कमाई खाते में आते ही पैसा कहां और कितना जाएगा, ताकि खर्च के बाद जो बचे उसी से निवेश करने की आदत न बने।

पहला कदम : आर्थिक सुरक्षा मजबूत करें

निवेश शुरू करने से पहले वित्तीय सुरक्षा की नींव मजबूत करना जरूरी है। यदि परिवार में आपकी आय पर दूसरे सदस्य निर्भर हैं तो पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा और जरूरत के अनुसार टर्म जीवन बीमा पर ध्यान देना चाहिए। बीमा का उद्देश्य निवेश से कमाई करना नहीं, बल्कि अचानक आने वाले बड़े आर्थिक संकट से परिवार को बचाना है। इसी तरह कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी घरेलू खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि के रूप में अलग रखना उपयोगी है। इसे ऐसे साधन में रखा जाना चाहिए, जहां जरूरत पड़ने पर रकम आसानी से उपलब्ध हो। इस पैसे को शेयर बाजार में लगाकर ज्यादा रिटर्न कमाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

दूसरा कदम : महंगे कर्ज से पहले छुटकारा

अगर क्रेडिट कार्ड, व्यक्तिगत ऋण या किसी तत्काल ऋण पर बहुत ज्यादा ब्याज दिया जा रहा है तो निवेश बढ़ाने से पहले ऐसे कर्ज को खत्म करना प्राथमिकता होनी चाहिए। मसलन, क्रेडिट कार्ड का बकाया लंबे समय तक छोड़ने पर ब्याज तेजी से बढ़ सकता है। ऐसे कर्ज के रहते बाजार में निवेश करके ज्यादा रिटर्न कमाने की उम्मीद करना जोखिम भरा हो सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं। सामने बकाया रकम, ब्याज दर और हर महीने की किस्त लिखें। ज्यादा ब्याज वाले असुरक्षित कर्ज को पहले चुकाने की कोशिश करें।



हर महीने नहीं, समय समय पर करें समीक्षा

वित्तीय योजना का मतलब रोज शेयर बाजार देखना या बार-बार निवेश बदलना नहीं है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। लंबी अवधि के निवेशक के लिए अनुशासन और निरंतरता ज्यादा महत्वपूर्ण है। हां, आय बढ़ने, नौकरी बदलने, शादी, बच्चे होने, घर खरीदने या बड़े कर्ज जैसी परिस्थितियों में योजना की समीक्षा जरूर करनी चाहिए।

तीसरा कदम : लक्ष्यों के हिसाब से करें निवेश

सारी बचत को एक ही जगह लगाना सही रणनीति नहीं है। पहले यह तय करें कि पैसा कब चाहिए। पांच साल से कम अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बहुत ज्यादा जोखिम वाले निवेश से बचना बेहतर है। वाहन खरीदना, घर की मरम्मत, बच्चों की निकट अवधि की फीस या अन्य जरूरी खर्च इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए सुरक्षित बचत विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। वहीं 10 साल या उससे अधिक अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति, बच्चों की उच्च शिक्षा या लंबे समय में संपत्ति बनाने जैसे लक्ष्यों के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड या व्यापक बाजार सूचकांक आधारित फंड विकल्प हो सकते हैं। हालांकि निवेश का चुनाव व्यक्ति की जोखिम क्षमता, उम्र, आय और लक्ष्य के अनुसार होना चाहिए।

चौथा कदम : निवेश को अपने आप चलने दें

वित्तीय योजना तभी सफल होती है जब उसे नियमित रूप से लागू किया जाए। इसके लिए एसआईपी जैसी स्वचालित व्यवस्था उपयोगी हो सकती है। वेतन या आय खाते में आते ही निर्धारित रकम निवेश के लिए अलग हो जाए तो महीने के अंत में बची रकम निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। मान लीजिए किसी व्यक्ति की मासिक आय 60 हजार रुपये है। वह जरूरी खर्च और सुरक्षा की रकम तय करने के बाद 10 हजार रुपये लंबे समय के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहता है। यदि हर महीने एक निश्चित तारीख को यह रकम स्वतः निवेश हो जाए तो बाजार की रोजाना की खबरों या मूड के आधार पर निवेश रोकने की संभावना कम होगी।

5वां कदम : लिखें पूरी तस्वीर

- मासिक आय : कितनी रकम हाथ में आती है।
- जरूरी खर्च : घर चलाने में कितना खर्च होता है।
- कर्ज : कितना बकाया है और ब्याज।
- आपातकालीन निधि : कितनी रकम अलग रखी।
- बीमा : स्वास्थ्य और जीवन बीमा कितना है।
- निवेश : हर महीने कितनी रकम और किस लक्ष्य के लिए निवेश होगी।
- लक्ष्य : अगले 3, 5, 10 और 20 साल में किन जरूरतों के लिए पैसा चाहिए।
- एक पन्ने से व्यक्ति को हर माह यह समझने में आसानी होगी कि उसकी आय कहां जा रही है व भविष्य के लिए कितना पैसा तैयार हो रहा है।

पुराने खातों और निवेश की भी करें सफाई

कई लोगों के पास जरूरत से ज्यादा बैंक खाते, क्रेडिट कार्ड और छोटे-छोटे निवेश होते हैं। समय-समय पर इनकी समीक्षा करनी चाहिए। जिन खातों या कार्ड का उपयोग नहीं हो रहा है, उनकी जरूरत और शुल्क की जांच करें। अलग-अलग निवेशों की सूची बनाकर देखें कि कहीं एक ही तरह के कई उत्पाद तो नहीं हैं। साथ ही बैंक खाते, बीमा, म्यूचुअल फंड, शेयर और अन्य वित्तीय निवेशों में नॉमिनी की जानकारी अपडेट रखें। परिवार में किसी अनहोनी की स्थिति में यह छोटी-सी सावधानी बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

पैसा बचाना ही पर्याप्त नहीं, उसे सही दिशा देना जरूरी

एक अच्छी वित्तीय योजना वह नहीं जिसमें सबसे ज्यादा निवेश उत्पाद हों, बल्कि वह है जिसमें हर रुपये की भूमिका स्पष्ट हो। पहले सुरक्षा, फिर महंगे कर्ज से मुक्ति और उसके बाद लक्ष्य आधारित निवेश—यह सरल क्रम आर्थिक अव्यवस्था को व्यवस्थित करने में मदद कर सकता है। योजना एक बार बनाकर भूलने के बजाय साल में कम से कम एक बार उसकी समीक्षा करें। धीरे-धीरे आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम बढ़ाते रहें। यही अनुशासन लंबे समय में छोटी बचत को बड़ा वित्तीय सहारा बना सकता है।

30 की उम्र में निवेश शुरू कर रहे हैं तो पहले साल ऐसे बनाएं मजबूत आधार

- पहले आपातकालीन निधि और महंगे कर्ज से निपटें
- लक्ष्य के हिसाब से बचत और निवेश करना शुरू करें
- लंबी अवधि के लिए एसआईपी और सूचकांक फंड बेहतर विकल्प

जानकारी
बिजनेस डेस्क

अगर आपकी उम्र 30 साल है और आपने अभी तक निवेश शुरू नहीं किया है तो घबराने की जरूरत नहीं है। इस उम्र में आपके पास लंबी अवधि का फायदा उठाने के लिए पर्याप्त समय है। हालांकि निवेश की शुरुआत किसी खास शेयर या म्यूचुअल फंड को चुनने से नहीं, बल्कि अपनी आर्थिक स्थिति समझने से होनी चाहिए। पहले साल का लक्ष्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि ऐसी वित्तीय व्यवस्था तैयार करना होना चाहिए जिसे आने वाले वर्षों में आसानी से जारी रखा जा सके। निवेश शुरू करने से पहले तीन सवालों के जवाब तलाशें-पैसा किस लक्ष्य के लिए चाहिए, कब चाहिए और बाजार में गिरावट आने पर आप कितना जोखिम उठा सकते हैं। इसके आधार पर ही निवेश की दिशा तय होगी।

सबसे पहले बनाएं आपातकालीन निधि

यदि आपके पास बचत नहीं है और क्रेडिट कार्ड या व्यक्तिगत ऋण जैसा महंगा कर्ज चल रहा है तो पहले साल का पूरा ध्यान निवेश बढ़ाने के बजाय वित्तीय आधार मजबूत करने पर होना चाहिए। कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि में रखना उपयोगी है। नौकरी जाने, बीमारी, अचानक बड़े खर्च या किसी अन्य आपात स्थिति में यही रकम काम आएगी। इसे ऐसे विकल्प में रखना चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से निकाला जा सके। आपातकालीन निधि बनने के बाद ही लंबी अवधि के निवेश को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए।



महंगे कर्ज को निवेश से पहले खत्म करें

क्रेडिट कार्ड का बकाया या ज्यादा ब्याज वाला व्यक्तिगत ऋण आपकी आर्थिक प्रगति को धीमा कर सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं और ब्याज दर देखें। ज्यादा ब्याज वाले कर्ज को पहले चुकाना बेहतर है। कर्ज खत्म होने के बाद उसकी मासिक किस्त के बराबर रकम को निवेश में लगाया जा सकता है। इस तरह कर्ज चुकाने की आदत सीधे निवेश की आदत में बदल सकती है।

हर लक्ष्य की तय करें समय सीमा

निवेश का तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि पैसा कब चाहिए। तीन साल के भीतर जरूरत पड़ने वाली रकम को शेयर बाजार जैसे उतार-चढ़ाव वाले साधनों में लगाने से बचना चाहिए। कार खरीदना, शादी, घर की शुरुआती रकम या निकट अवधि की शिक्षा जैसे लक्ष्य इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए बैंक सावधि जमा, आवर्ती जमा या अन्य अपेक्षाकृत सुरक्षित विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। दूसरी ओर, यदि लक्ष्य 10, 15 या 20 साल दूर है तो बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति या बच्चे की उच्च शिक्षा जैसे लंबे लक्ष्यों में महंगाई को ध्यान में रखना जरूरी है।

शुरुआती निवेशक के लिए सूचकांक फंड सरल विकल्प

लंबी अवधि के निवेश की शुरुआत करने वाले निवेशक के लिए व्यापक बाजार सूचकांक पर आधारित म्यूचुअल फंड एक सरल विकल्प हो सकता है। ऐसे फंड किसी प्रमुख सूचकांक की कंपनियों में निवेश करते हैं। इससे एक ही कंपनी पर निर्भरता कम होती है और निवेशक को अलग-अलग शेयर चुनने की जरूरत नहीं पड़ती। हालांकि इक्विटी आधारित निवेश में बाजार जोखिम रहता है। इसलिए इसका इस्तेमाल उन्हीं लक्ष्यों के लिए करना चाहिए जिनकी समय सीमा लंबी हो।

उदाहरण से समझें

मान लीजिए रोहन की उम्र 30 साल है और उसे हर महीने कर कटौती के बाद 80 हजार रुपये मिलते हैं। उसके पास पहले से आपातकालीन निधि है। वह दो साल बाद कार खरीदना चाहता है और साथ ही सेवानिवृत्ति के लिए भी निवेश शुरू करना चाहता है। ऐसी स्थिति में वह अपनी क्षमता के अनुसार, उदाहरण के तौर पर, हर महीने 15 हजार रुपये कार के लक्ष्य के लिए सुरक्षित बचत में और 15 हजार रुपये लंबी अवधि के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड की एसआईपी में लगा सकता है। इस तरह दोनों लक्ष्यों का पैसा अलग रहेगा। कार के लिए रखा पैसा बाजार की गिरावट से प्रभावित नहीं होगा और सेवानिवृत्ति के लिए किया गया निवेश लंबे समय तक बढ़ने का अवसर पाएगा।

जोखिम क्षमता भी समझें

सिर्फ यह देखकर निवेश न करें कि कोई फंड या शेयर पिछले साल कितना बढ़ा। पहले यह समझें कि बाजार में 20-30 प्रतिशत गिरावट आने पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी। मान लीजिए आपने 10 हजार रुपये निवेश किए और कुछ समय बाद उसकी कीमत घटकर 8 हजार रुपये रह गई। यदि इससे आप घबरा कर निवेश बेच देंगे तो इक्विटी निवेश आपके लिए कठिन हो सकता है। लेकिन अगर आप उतार-चढ़ाव को स्वीकार कर लंबे समय तक निवेश बनाए रख सकते हैं तो आपकी जोखिम क्षमता ज्यादा हो सकती है। यानी निवेश का चुनाव केवल रिटर्न देखकर नहीं, बल्कि लक्ष्य और जोखिम क्षमता देखकर करें।

बचत को हर माह की आदत बनाएं

- सबसे कम कमाई वाले महीने को आधार बनाएं
- वेतन आते ही बचत अलग खाते में डालें
- पहले तैयार करें अपने लिए आपातकालीन कोष
- लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार

योजना
बिजनेस डेस्क

कई लोगों की कमाई हर महीने एक जैसी नहीं होती। कभी बोनस मिल जाता है तो कभी अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। ऐसे अच्छे महीने में बचत भी बढ़ जाती है, लेकिन अचानक आया बड़ा खर्च या कम आय वाला महीना पूरी बचत खत्म कर देता है। नतीजा यह होता है कि कई साल कमाने के बाद भी व्यक्ति के पास आपात स्थिति के लिए पर्याप्त रकम नहीं होती। समस्या हमेशा कम कमाई नहीं होती, बल्कि नियमित बचत के लिए तय व्यवस्था का अभाव भी इसका बड़ा कारण है। वित्तीय मजबूती के लिए बचत को महीने के अंत में बची रकम पर निर्भर करने के बजाय इसे कमाई का पहला काम बनाना जरूरी है। यानी पैसा आते ही बचत की रकम अलग और उसके बाद खर्च। यही छोटी आदत लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार कर सकती है।

पहले समझें, बचत क्यों नहीं हो रही

बचत शुरू करने से पहले यह पता लगाना जरूरी है कि पैसा बच क्यों नहीं रहा। कुछ लोगों की आय हर महीने बदलती है। स्वतंत्र काम करने वाले, कमीशन पर काम करने वाले या कारोबार से जुड़े लोगों के लिए एक महीने की आय दूसरे महीने से काफी अलग हो सकती है। दूसरी समस्या यह है कि बचत का इरादा तो होता है, लेकिन हर महीने कोई न कोई खर्च उसे पीछे धकेल देता है। कई लोग सोचते हैं कि महीने के अंत में जो रकम बचेगी, उसे बचा लेंगे। व्यवहार में अक्सर महीने के अंत तक बहुत कम रकम बचती है। इसलिए बचत के लिए इच्छा नहीं, व्यवस्था बनाना जरूरी है।

3 माह की आय से तय करें अपना बजट

सबसे पहले पिछले तीन महीनों की कुल आय देखें और उसका औसत निकालें। लेकिन यदि आय में काफी उतार-चढ़ाव रहता है तो औसत आय के बजाय सबसे कम आय वाले महीने को अपना बजट आधार बनाना ज्यादा सुरक्षित हो सकता है। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को तीन महीनों में 40 हजार, 48 हजार और 35 हजार रुपये मिले। औसत आय करीब 41 हजार रुपये बैठती है, लेकिन बजट 35 हजार रुपये की सबसे कम आय को आधार मानकर बनाया जा सकता है। इससे कम आय वाले महीने में भी जरूरी खर्च पूरे करने में परेशानी नहीं होगी। अब इसमें से किराया, राशन, बिजली-पानी, आने-जाने और अन्य जरूरी खर्च अलग करें।



वेतन आते ही पहले बचत करें

नियमित वेतन पाने वालों के लिए सबसे आसान तरीका है—पहले खुद को भुगतान करें। मान लीजिए आपकी मासिक आय 40 हजार रुपये है और आप हर महीने 5 हजार रुपये बचाना चाहते हैं। वेतन खाते में आते ही 5 हजार रुपये दूसरे खाते में स्वतः स्थानांतरित करने की व्यवस्था कर दें। इसके बाद बचे पैसे से महीने का खर्च चलाएं। इसका फायदा यह है कि बचत की रकम खर्च करने वाले खाते में पड़ी ही नहीं रहेगी। बचत को इच्छाशक्ति के भरोसे रखने के बजाय स्वचालित व्यवस्था का हिस्सा बनाया जा सकता है।

आय तय नहीं तो प्रतिशत के हिसाब से बचाएं

यदि कमाई हर महीने अलग है तो निश्चित रकम बचाने के बजाय आय का एक तय प्रतिशत अलग करना बेहतर हो सकता है। उदाहरण के लिए हर भुगतान का 15 से 20 प्रतिशत बचत खाते में डालने का नियम बनाया जा सकता है। मान लीजिए किसी स्वतंत्र पेशेवर की मासिक आय 25 हजार से 60 हजार रुपये के बीच रहती है। वह हर भुगतान का 18 प्रतिशत बचत के लिए अलग करता है। इस तरह कम आय वाले महीने में बचत की रकम कम होगी और ज्यादा कमाई होने पर बचत अपने आप बढ़ जाएगी।

बचत के लिए अलग खाता रखें

बचत और रोजमर्रा के खर्च का पैसा एक ही खाते में रखने से अनजाने में बचत खर्च होने की संभावना रहती है। इसलिए बचत के लिए अलग बैंक खाता रखना उपयोगी हो सकता है। संभव हो तो इसे रोजमर्रा के खाते से अलग बैंक में रखें। बोनस, कर वापसी या अचानक मिली अतिरिक्त रकम का एक हिस्सा सीधे इसी खाते में डाल सकते हैं।

पहले आपातकालीन कोष, बाद में ज्यादा रिटर्न

बचत का पहला उद्देश्य हर बार ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं होना चाहिए। पहले ऐसा आपातकालीन कोष तैयार करें जिससे अचानक आने वाले खर्च के समय निवेश या कर्ज पर निर्भरता कम हो। नियमित वेतन वालों के लिए तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर आपातकालीन निधि एक अच्छा आधार हो सकती है। वहीं जिनकी आय में ज्यादा उतार-चढ़ाव रहता है, वे छह से नौ महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम रखने पर विचार कर सकते हैं। यह रकम ऐसे विकल्प में रखी जानी चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो। आपातकालीन निधि का पहला उद्देश्य सुरक्षा और तरलता है, अधिकतम रिटर्न नहीं।

योजना बनाकर भूल जाना भी ठीक नहीं

बचत की योजना बनाकर उसे भूल जाना भी सही नहीं है। महीने में केवल 15 मिनट निकालकर देखें कि आय कितनी रही, जरूरी खर्च कितना हुआ और तय बचत लक्ष्य पूरा हुआ या नहीं। यदि किराया बढ़ गया, परिवार में नया खर्च जुड़ गया या आय में बदलाव हुआ है तो बचत लक्ष्य में भी बदलाव किया जा सकता है। महत्वपूर्ण यह है कि बचत पूरी तरह बंद न हो।

इन पांच गलतियों से बचें

- महीने के अंत में बचतः तब तक पैसा खत्म हो सकता है।
- एक ही खाते में बचत और खर्चः बचत अनजाने में खर्च हो सकती है।
- सिर्फ अच्छे महीने में बचतः इससे नियमित आदत नहीं बनती।
- बिना बजट तय किए रकम निर्धारित करनाः लक्ष्य आपकी वास्तविक आय से मेल खाना चाहिए।
- योजना की समीक्षा न करनाः आय और खर्च बदलने के साथ बजट भी बदलना चाहिए।

निवेश से पहले बचत की मजबूत नींव जरूरी

शेयर, म्यूचुअल फंड या किसी अन्य निवेश में पैसा लगाने से पहले नियमित बचत की आदत और आपातकालीन निधि तैयार करना जरूरी है। कम रकम से शुरुआत करना कोई समस्या नहीं है। महीने में 500 रुपये भी नियमित रूप से बचाना उस महीने हजारों रुपये बचाकर अगले महीने फिर शून्य पर पहुंचने से बेहतर है।

अलर्ट 3 से 10 साल की अवधि में निवेश करने का बेहतीन विकल्प, लक्ष्य के हिसाब से तय होगी मासिक किस्त, तैयार होगा फंड

बच्चे के नाम हर महीने बचत, तैयार होगा एक लाख का फंड एसबीआई की 'हर घर लखपति' आरडी में 6.7% सालाना ब्याज

समझदारी
बिजनेस डेस्क

बच्चे की पढ़ाई, उच्च शिक्षा या भविष्य की किसी बड़ी जरूरत के लिए समय रहते बचत शुरू करना समझदारी है। ऐसे में अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव से अलग रहकर हर महीने एक निश्चित रकम जमा करना चाहते हैं, तो भारतीय स्टेट बैंक यानी एसबीआई की 'हर घर लखपति' योजना एक विकल्प हो सकती है। यह कोई अलग निवेश उत्पाद नहीं, बल्कि रिकरिंग डिपॉजिट यानी आरडी का एक रूप है। इसमें निवेशक हर महीने एक तय रकम जमा करता है और तय अवधि पूरी होने पर जमा रकम के साथ ब्याज मिलता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस योजना में फिलहाल 6.7% सालाना ब्याज मिल रहा है। निवेश की अवधि 3 साल से 10 साल तक रखी जा सकती है। यानी अभिभावक बच्चे की उम्र और भविष्य के लक्ष्य के हिसाब से अवधि चुन सकते हैं।

क्या है 'हर घर लखपति' योजना?

नाम से लग सकता है कि यह कोई अलग सरकारी योजना है, लेकिन वास्तव में यह एसबीआई की आरडी आधारित सुविधा है। इसका उद्देश्य नियमित बचत के जरिए एक तय लक्ष्य राशि तैयार करना है। इसे सामान्य आरडी की तरह समझ सकते हैं, जिसमें हर महीने एक निश्चित राशि जमा करनी होती है। मसलन, अगर अभिभावक बच्चे के लिए हर महीने थोड़ी रकम अलग रखते हैं तो कुछ वर्षों में यह रकम ब्याज के साथ एक बड़े फंड में बदल सकती है।

3 से 10 साल तक निवेश

इस योजना में 3 साल से 10 साल तक की अवधि चुनी जा सकती है। अवधि का चुनाव बच्चे की जरूरत के हिसाब से करना महत्वपूर्ण है। यदि बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए पांच साल बाद रकम चाहिए तो पांच साल की अवधि वाला लक्ष्य बनाया जा सकता है। अगर जरूरत 10 साल बाद है तो लंबी अवधि का विकल्प चुना जा सकता है। हालांकि निवेश की अवधि तय करते समय यह भी देखना चाहिए कि बीच में पैसों की जरूरत पड़ सकती है या नहीं। समय से पहले आरडी बंद करने पर बैंक के नियम लागू हो सकते हैं।



बच्चे के नाम पर खाता कैसे खुलेगा?

इस योजना में कोई व्यक्ति सिंगल या जॉइंट अकाउंट खोल सकता है। 10 साल से अधिक उम्र के बच्चे के नाम पर भी खाता खोला जा सकता है, लेकिन इसके लिए बच्चे का ठीक से हस्ताक्षर करने में सक्षम होना जरूरी है। यदि बच्चा हस्ताक्षर करने में सक्षम नहीं है तो उसके नाम पर खाता माता-पिता या अभिभावक के साथ खोला जा सकता है। यानी बच्चे की उम्र और उसकी हस्ताक्षर करने की क्षमता के आधार पर खाते का संचालन तय होगा।

1 लाख रुपये का लक्ष्य कैसे पूरा होगा?

अगर आपका लक्ष्य बच्चे के लिए 5 साल में 1 लाख रुपये का फंड तैयार करना है तो उपलब्ध गणना के अनुसार हर महीने करीब 1,420 रुपये जमा करने होंगे। इसी तरह यदि आप 10 साल में 1 लाख रुपये का लक्ष्य रखते हैं तो मासिक जमा करीब 610 रुपये होगी। इससे यह समझना आसान है कि लंबी अवधि चुनने पर मासिक बचत का बोझ कम हो सकता है। हालांकि इन आंकड़ों को उदाहरण के रूप में देखना चाहिए। वास्तविक मासिक किस्त बैंक की लागू ब्याज दर, आरडी की शर्तों और गणना पद्धति के अनुसार बदल सकती है।

लक्ष्य बढ़ाएं तो किस्त भी बढ़ेगी

इस योजना में लक्ष्य केवल 1 लाख रुपये तक सीमित नहीं है। निवेशक अपनी जरूरत के अनुसार 2 लाख, 3 लाख, 4 लाख रुपये या उससे अधिक का लक्ष्य भी निर्धारित कर सकता है। लक्ष्य राशि बढ़ने के साथ मासिक किस्त भी बढ़ेगी। मसलन, जिस परिवार को बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए 4 लाख रुपये का फंड बनाना है, वह छोटी अवधि के बजाय लंबी अवधि चुनकर मासिक निवेश का बोझ कम रखने की कोशिश कर सकता है।

छोटी बचत से बड़ा लक्ष्य

इस योजना का सबसे बड़ा फायदा अनुशासित बचत है। अक्सर परिवार एकमुश्त रकम बचाने की योजना तो बनाते हैं, लेकिन नियमित रूप से पैसा अलग नहीं रख पाते। आरडी में हर महीने तय रकम जमा करने की व्यवस्था होने के कारण बचत की आदत बन सकती है। मान लीजिए परिवार हर महीने करीब 600 रुपये अलग रखता है। यह रकम रोजाना के खर्च में बहुत बड़ी नहीं लगती, लेकिन लंबे समय तक लगातार जमा होने पर ब्याज के साथ एक निश्चित फंड तैयार कर सकती है।

सिर्फ ब्याज देखकर फैसला न करें

हालांकि 6.7% ब्याज आकर्षक लग सकता है, लेकिन निवेश का फैसला केवल ब्याज दर देखकर नहीं करना चाहिए। अभिभावकों को यह भी देखना चाहिए कि बच्चे का लक्ष्य कितने साल बाद है, कितनी रकम की जरूरत होगी और महंगाई के कारण भविष्य में उस लक्ष्य की लागत कितनी बढ़ सकती है। मसलन, आज उच्च शिक्षा पर 5 लाख रुपये खर्च हो रहे हैं तो 8-10 साल बाद यही खर्च काफी अधिक हो सकता है। इसलिए लंबे समय के लक्ष्य के लिए केवल आरडी पर निर्भर रहने के बजाय अन्य निवेश विकल्पों से भी इसकी तुलना करनी चाहिए।

टैक्स और समय से पहले निकासी के नियम भी समझें

आरडी में मिलने वाला ब्याज कर नियमों के दायरे में आ सकता है। इसलिए बड़ी रकम जमा करने से पहले अपनी कर स्थिति के अनुसार जानकारी लेना जरूरी है। इसी तरह अगर बीच में पैसे की जरूरत पड़ती है तो समय से पहले आरडी बंद करने या आंशिक निकासी से जुड़े बैंक के नियम लागू हो सकते हैं। निवेश शुरू करने से पहले एसबीआई की मौजूदा ब्याज दर, आरडी की शर्तें, नाबालिग के खाते के नियम और समय से पहले खाता बंद करने के प्रावधान जरूर जांच लें।

ऐसे समझें योजना

- योजनाः एसबीआई 'हर घर लखपति'
- प्रकारः रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी)
- ब्याज दर 6.7% सालाना
- अवधि 3 से 10 साल
- 5 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 1,420 रुपये मासिक
- 10 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 610 रुपये मासिक
- लक्ष्य 1 लाख से अधिक भी
- खाता सिंगल या जॉइंट
- बच्चे के नाम खाता 10 साल से अधिक उम्र में, शर्तों के अनुसार
- कम उम्र/हस्ताक्षर में असमर्थ बच्चा माता-पिता/अभिभावक के साथ
- ब्याज दर और बैंक के नियम समय के साथ बदल सकते हैं।

खबर संक्षेप

तनय ने चैंपियनशिप में जीते 2 रजत पदक

कनीना। कनीना निवासी खिलाड़ी तनय ने पुडुचेरी में आयोजित रोलर स्केटिंग चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए दोहरी सफलता हासिल की है। पुडुचेरी रोलर स्केटिंग एसोसिएशन के तत्वावधान में चार अक्टूबर तक 28वीं राज्य स्तरीय रोलर स्केटिंग चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। कनीना के होनहार स्केटिंग खिलाड़ी तनय ने छह से आठ आयु वर्ग में भाग लिया। उन्होंने 200 मीटर व 500 मीटर रेस में दूसरा स्थान हासिल कर दो रजत पदक अपने नाम किए।

यूजीसी बिल को लेकर बैठक आज

कनीना। यूजीसी बिल को लेकर उत्पन्न परिस्थितियों व समाज से जुड़े विभिन्न पहलुओं को लेकर रविवार को कनीना में बैठक आयोजित की जाएगी। सुरेश वसिष्ठ ने बताया कि सुबह 9:30 बजे नेताजी मेमोरियल क्लब परिसर में होने वाली इस बैठक में यूजीसी बिल के विरोध में रणनीति तैयार की जाएगी। डॉ. रविंद्र कौशिक ने बताया कि सामाजिक हितों से जुड़े ऐसे गंभीर मुद्दों पर हर व्यक्ति की राय महत्वपूर्ण है।

कनीना में स्वास्थ्य जांच शिविर आज

कनीना। सेवा भारती की ओर से मंडी में 11 अक्टूबर को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। योगेश अग्रवाल ने बताया कि शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर दो बजे तक लाला शिवलाल की धर्मशाला में आयोजित होगा। जिसमें किडनी रोग विशेषज्ञ डॉ. तरुण यादव, सामान्य रोग विशेषज्ञ डॉ. हर्ष मरीजों की जांच करेंगे। ईसीजी, ब्लड प्रेशर व ब्लड शुगर की जांच निःशुल्क रहेगी।

अटेली कॉलेज में 18 को जुटेंगे पूर्व विद्यार्थी

मंडी अटेली। राजकीय कॉलेज अटेली में 18 को द्वितीय एलुमनी मीट का आयोजन किया जाएगा। इसमें महाविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी एकत्रित होकर पुरानी यादें साझा करेंगे। इस दौरान उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने वाले पूर्व विद्यार्थियों को सम्मानित करने की भी योजना है। प्राचार्य डॉ.राजेश कुमार सैनी ने बताया कि यह सम्मेलन पूर्व विद्यार्थियों को अपने शिक्षण संस्थान, गुरुजनों और पुराने सहपाठियों से दोबारा जुड़ने का अवसर प्रदान करेगा।

मोहल्ला चान्दुवाड़ा में श्रीरामलीला में दिखी त्रेतायुग की साक्षात झलक

वर्ष 1950 से आयोजित हो रही यह ऐतिहासिक रामलीला

राम जन्म और ताड़का वध का मंचन देख दर्शक हुए भावविभोर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरी के मोहल्ला चान्दुवाड़ा में आयोजित श्री धार्मिक रामलीला ट्रस्ट के 77वें भव्य महोत्सव के दूसरे दिन दर्शकों को त्रेतायुग की साक्षात झलक देखने को मिली। वर्ष 1950 से निरंतर आयोजित हो रही इस ऐतिहासिक रामलीला के मंच पर शुक्रवार रात राम जन्म, ताड़का-वध और सुबाहु-मारीच के प्रसंगों का बेहद मार्मिक मंचन किया गया। डिजिटल लाइटिंग और आधुनिक ध्वनि व्यवस्था के अद्भुत तालमेल के बीच जैसे ही भगवान राम द्वारा राक्षसी ताड़का का वध हुआ, पूरा पंडाल जय श्री राम के गगनभेदी उद्घोष से गूंज उठा।

यह भव्य आयोजन संस्था के संस्थापक पं. रेवतीनन्द हरित के पावन आशीर्वाद और वर्तमान संरक्षक शम्भूदयाल गर्ग के कुशल मार्गदर्शन में हो रहा है। ट्रस्ट के प्रधान संजय गर्ग, सचिव दीपक हरित, कोषाध्यक्ष जगदीश भारद्वाज व रामलीला प्रधान नरेन्द्र जैन ने बताया कि इस बार मंचन को आधुनिक तकनीक से युक्त बनाने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। इस वर्ष के पूरे आयोजन में श्री सूर्य नारायण भगवान डोला समिति व लड्डू गोपाल सेवा समिति का विशेष सहयोग रहेगा। कुशल निर्देशक डॉ. मनोज वर्मा के निर्देशन में कलाकारों ने अपने अभिनय से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने बताया कि ऋषि विश्वामित्र के रूप में मोहित सोनी, महर्षि वशिष्ठ के रूप में सत्यम वर्मा और श्रृंगी ऋषि के रूप में कैलाश हरित ने मंच पर भक्तिमय माहौल बना दिया। राक्षसी पात्रों में ताड़का बने बलवंत सैनी, सुबाहु बने ललित सैनी और मारीच बने योगेश वर्मा के दमदार अभिनय ने दृश्यों में जान फूंक दी। द्वारपाल की भूमिका अंकुर पाण्डे ने निभाई। इस मौके पर विनोद शर्मा, डॉ. ममता शर्मा, डॉ. राधेश्याम, विनोद सर्राफ, मनमोहन सोनी आदि उपस्थित रहे।

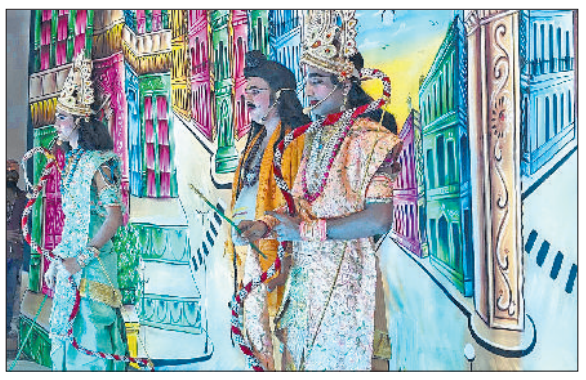

नारनौल। रामलीला में मंचन करते कलाकार। फोटो : हरिभूमि

अहिल्या उद्धार व फुलवारी लीला का मंचन



नारनौल। भगवान नारायण सेवा संस्था रजिस्टर्ड की ओर से श्री कृष्णा ड्रामेटिक क्लब अनाज मंडी के मंच पर तीसरे दिन सुबाहु मारीच, फुलवारी, जनक संदेश, अहिल्या उद्धार लीला का मंचन हुआ। रामलीला कमेटी के प्रवक्ता सुरेंद्र जैन ने बताया कि मुख्य अतिथि बृजमोहन गर्ग व प्रेमचंद गुलाटी ने सरस्वती मैया के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित व गणेश पूजन कर लीला प्रारंभ करवाई। मंच संचालन भारत भूषण तायल ने किया। रामलीला कमेटी के प्रभारी दयानंद सैनी ने बताया कि राम-ध्रुव वर्मा, लक्ष्मण-कनिष्क कोहली, विश्वामित्र, मारिच-महावीर, सुबाहु-जगदीश बिल्ला, जनक संदेश-वासुदेव सिंघल, सीता-विवेक शर्मा, सखियां- सतीश बेदी, अहिल्या-सतीश बेदी, माली-वासुदेव सिंघल ने अभिनय किया। इस मौके पर हितेश वर्मा, दर्शन कुमार, जगदीश बिल्ला, मनोज निर्मल, नरेश तायल, मंच संचालक भारत भूषण तायल, रतनलाल भास्कर, अनूप भाटा, रवी गर्ग, गोपाल जैन, मोक्ष जैन, विजय जैन, दयानन्द सैनी मौजूद थे।

अटेली झंडा चौक की रामलीला में गूंजा जय श्रीराम

मंडी अटेली। अटेली मंडी के झंडा चौक पर श्री शिव रामलीला समिति की ओर से आयोजित रामलीला के चौथे दिन ताड़का एवं सुबाहु वध की लीला का मंचन किया गया। कार्यक्रम में नांगल चौधरी की विधायक मंजू चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रही। कलाकारों ने शानदार अभिनय के माध्यम से भगवान श्रीराम की वीरता और धर्म की स्थापना का प्रसंग प्रस्तुत किया। मंचन के दौरान दिखाया गया कि महर्षि विश्वामित्र राक्षसों से यज्ञ की रक्षा करने के लिए अयोध्या के राजा दशरथ के दरबार में पहुंचते हैं। वह राजा दशरथ से श्रीराम और लक्ष्मण को अपने साथ भेजने का आग्रह करते हैं। इस पर राजा दशरथ चिंतित हो जाते हैं, लेकिन महर्षि वशिष्ठ के समझाने पर वह दोनों राजकुमारों को विश्वामित्र के साथ भेज देते हैं। वन मार्ग में राक्षसी ताड़का श्रीराम और लक्ष्मण का रास्ता रोक लेती है। महर्षि विश्वामित्र के निर्देश पर प्रभु श्रीराम ताड़का का वध कर देते हैं। बहन ताड़का के वध की सूचना मिलने पर उसका भाई सुबाहु युद्ध करने पहुंचता है, लेकिन श्रीराम उसका भी वध कर देते हैं। इसके बाद भगवान श्रीराम श्राप के कारण पत्थर की शिला बनी अहिल्या का उद्धार करते हैं। इन प्रसंगों के मंचन पर दर्शकों ने खूब उत्साह दिखाया। रामलीला में ताड़का की भूमिका राकेश सैनी प्रसाद, राजा जनक की भूमिका प्रमोद रोहिल्ला और महर्षि विश्वामित्र की भूमिका धर्मेंद्र वशिष्ठ ने निभाई। इस मौके पर पिंकू, गौरव गर्ग, अजय मुद्गिल, जितेंद्र सीए, अरुण गुप्ता सहित समिति के सदस्य और बड़ी संख्या में महिलाएं व दर्शक मौजूद रहे।



मंडी अटेली। झंडा चौक पर रामलीला के दौरान ताड़का के रूप में दहाड़ते कलाकार।

आरपीएस स्कूल में सेवा संकल्प पेंटिंग स्पर्धा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

आरपीएस इंटरनेशनल स्कूल भड़फ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महत्वाकांक्षी मेरा भारत-सेवा संकल्प अभियान 2026-27 के अंतर्गत ड्राइंग एंड पेंटिंग प्रतियोगिता हुई। विद्यालय परिसर में आयोजित इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपनी कला और रचनात्मकता से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह प्रेरणादायक पहल सेवा, दया और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को समर्पित थी। कार्यक्रम का मुख्य थीम सेवा- संस्कार-संकल्प रहा। गुरुवार को सुबह 10 बजे से शुरू हुए इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. विश्वेश्वर कौशिक ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता आरपीएस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स की चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने की। विद्यालय के 28वें शैक्षिक वर्ष में आयोजित कार्यक्रम ने शिक्षा के साथ संस्कारों के महत्व को भी रेखांकित किया। प्रतियोगिता में कक्षा नर्सरी से आठ तक के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। बच्चों ने मेरा भारत, स्वच्छ भारत, सेवा ही धर्म है और एक भारत श्रेष्ठ भारत जैसे विषयों पर अपनी कल्पना को कैनवास पर उतारा। मुख्य अतिथि डॉ. विश्वेश्वर कौशिक ने कहा कि कला बच्चों के सर्वांगीण विकास का सबसे सशक्त माध्यम है। ऐसी प्रतियोगिताएं बच्चों में आत्मविश्वास और सामाजिक चेतना पैदा करती हैं। वहीं चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि आरपीएस संस्थान का लक्ष्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है। आरपीएस महेंद्रगढ़ प्राचार्य डॉ किशोर तिवारी, आरपीएस कनीना की प्राचार्य ज्योति भट्ट, समस्त स्टाफ व शिक्षक मौजूद रहे।



कनीना। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि। फोटो : हरिभूमि

हिदुस्तान पब्लिक स्कूल में हुई पीटीएम



मंडी अटेली। हिंदुस्तान पब्लिक स्कूल सलीमपुर में अभिभावक अध्यापक बैठक का आयोजन किया गया। इसमें अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने बच्चों की शैक्षणिक प्रगति, परीक्षा परिणाम, अनुशासन तथा अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की है। इस कार्यक्रम का शुभारंभ माता सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। स्कूल पहुंचने पर अध्यापकों ने अभिभावकों का स्वागत किया। इसके बाद अभिभावकों ने कक्षा अध्यापकों से मुलाकात कर बच्चों के परीक्षा परिणाम और पढ़ाई के स्तर पर चर्चा की गई। स्कूल के चेयरमैन पूर्व सरपंच एवं जिला पार्षद प्रतिनिधि शमशेर सिंह ने कहा कि बच्चों की शिक्षा और सर्वांगीण विकास में अभिभावकों तथा अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।अभिभावक-अध्यापक बैठकों से दोनों के बीच बेहतर तालमेल स्थापित होता है। स्कूल के प्राचार्य अनूप कुमार ने बैठक में पहुंचे सभी अभिभावकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि स्कूल प्रत्येक विद्यार्थी के शैक्षणिक, नैतिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है। विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के साथ उनमें अच्छे संस्कार, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना विकसित करना भी स्कूल का प्रमुख उद्देश्य है।

न्यूज डायरी



राव नेतराम स्कूल में हुई पीटीएम

नारनौल। राव नेतराम पब्लिक स्कूल सलीमपुर में शनिवार को अध्यापक-अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावकों ने अपना उत्साह दिखाया। प्राचार्या अनिता देवी अभिभावकों का बैठक को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया तथा अर्धवार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित करते हुए उन्होंने बताया कि परीक्षा से विद्यार्थियों की बुद्धि का आकलन किया जाता है। इससे पता लगता है कि किस विषय में अभी ओर मेहनत की आवश्यकता है। अभिभावकों की ओर से विद्यार्थियों का मानसिक व बौद्धिक विकास करने के लिए अनेक सुझाव प्राप्त हुए। उन्होंने बताया कि अभिभावकों के साथ विचार विमर्श किया कि आने वाले सर्द मौसम में विद्यार्थी की पढ़ाई तथा दिनचर्या को बेहतर बनाने के लिए एक समय-सारणी बनाए और उन्हें जीवन में नैतिक मूल्यों की कीमत बताए, ताकि उनका सर्वांगीण विकास किया जा सकें।

सूरज कॉलेज के दो विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय में किया शानदार प्रदर्शन



कोमल



खुशबू

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर द्वारा एमएससी रसायन विज्ञान दूसरे सेमेस्टर की टॉप 10 मेरिट लिस्ट घोषित की गई, जिसमें सूरज कॉलेज के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। एमएससी रसायन विज्ञान दुसरे सेमेस्टर की छात्रा कोमल शेखावत पुत्री राजू सिंह मनेठी ने 9.43 एसजीपीए लेकर पूरे विश्वविद्यालय में चौथा स्थान एवं खुशबू पुत्री सुनील कुमार बुडीन ने 9.37 एसजीपीए लेकर विश्वविद्यालय में पांचवा स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम प्रिया पुत्री कुलदीप 9.03 एसजीपीए, अनिता कुमारी पुत्री रामपाल 8.87 एसजीपीए, मधु पुत्री सुभाष चंद 8.83 एसजीपीए, हर्ष यादव पुत्र रिषिपाल यादव 8.37 एसजीपीए प्राप्त किया। प्राचार्य डॉ. सुधाकर गुप्ता ने बताया कि कॉलेज का श्रेष्ठ परिणाम विद्यार्थियों के कठोर परिश्रम व शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है।



सीएलसी में हुई अध्यापक-अभिभावक बैठक

नारनौल। बच्चों के सर्वांगीण विकास और शैक्षणिक प्रगति को साझा करने के लिए सीएलसी में अध्यापक-अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। सुबह से ही संस्थान में अभिभावकों की भारी उपस्थिति देखी गई, जिससे बच्चों की शिक्षा के प्रति उनका उत्साह साफ नजर आ रहा था। बैठक के दौरान कक्षा अध्यापकों ने अभिभावकों के साथ बच्चों के सीखने का स्तर, शैक्षणिक प्रगति और मानव मूल्यों पर आमने-सामने बैठकर विस्तार से चर्चा की। अभिभावक और शिक्षक मिलकर ही बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव तैयार कर सकते हैं। सीएलसी निदेशक नरेन्द्र सिंह ने अभिभावकों का आभार व्यक्त करते हुए उनसे आह्वान किया कि वे बच्चों की पढ़ाई में रुचि लें तथा शिक्षकों के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखें।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष से भेंट कर दी शुभकामना



महेंद्रगढ़। भाजपा जिला मंत्री एवं किसान मोर्चा के जिला प्रभारी संदीप मालड़ा ने भाजपा की प्रदेश अध्यक्ष डॉ. अर्चना गुप्ता से पानीपत स्थित उनके निवास स्थान पर मुलाकात की। इस बारे में संदीप मालड़ा ने बताया कि 17 सितंबर से पूरे देश के साथ-साथ हरियाणा में भी सेवा संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। हरियाणा में भाजपा की तरफ से इस अभियान का नेतृत्व डॉ. अर्चना गुप्ता कर रही हैं। पूरे हरियाणा में इसके अंतर्गत अनेक सेवा कार्य किए जा रहे हैं। संदीप मालड़ा ने कहा कि नरेंद्र मोदी की सेवा के 25 वर्ष पूर्व होने के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान को लेकर समाज में भारी उत्साह है। जिलाध्यक्ष डॉ. यतेन्द्र राव की अध्यक्षता में हुई इस मुलाकात के दौरान युवा मोर्चा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य टिंकल मंजीत यादव, ग्रीवेंस कमेटी मेम्बर कमल सैनी सहित खातीवास के सरपंच मुकेश जांगिड भी उपस्थित रहे।

सीएल स्कूल में अभिभावक-शिक्षक बैठक



नारनौल। हुडा स्थित सीएल पब्लिक स्कूल में पीटीएम का आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावको में बच्चों के अर्धवार्षिक परीक्षा, फाउंडेशन टेस्ट और स्कूल स्तर पर होने वाले ओलंपियाड टेस्ट के परिणाम जानने के लेकर उत्सुकता दिखाई। बैठक का मुख्य उद्देश्य अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संवाद स्थापित करना, ताकि छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन, व्यवहार, उपस्थिति और व्यक्तिगत विकास की समीक्षा की जा सके। शिक्षकों ने अभिभावकों को छात्र का रिपोर्ट कार्ड और विषयवार अंक तथा पाठ्य चर्चा व गृहकार्य पूरा करने, पढ़ाई की आदतों में सुधार के सुझाव दिए। इस अवसर पर सुझाव पेटी भी रखी गई, जिसमें बच्चों के साथ आए माता पिताओं ने अपने सुझाव दिए। प्राचार्य रविन्द्र सिंह ने बताया कि बैठक का मुख्य उद्देश्य माता पिता को बच्चों के प्रति जगरूक करना और उनके बच्चों की प्रत्येक क्रियाकलाप की जानकारी देना है।

एक शाम...वायुसेना के नाम कार्यक्रम में गूंजा देशभक्ति का जज्बा

नारनौल। भारतीय वायुसेना के 94वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में सेवानिवृत्त वायु सैनिक एसोसिएशन की ओर से 'एक शाम...वायुसेना के नाम' कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें पूर्व वायु सैनिकों ने एकत्रित होकर वायुसेना के गौरवशाली इतिहास और राष्ट्र रक्षा में योगदान को याद किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित कर किया गया। अध्यक्षता एयर वेटरन वीर विक्रम भालोठिया ने की। मुख्य अतिथि सूबेदार मेजर राजेंद्र सिंह यादव तथा विशिष्ट अतिथि एसबीआई के चीफ मैनेजर एयर वेटरन देवेंद्र पहल और भारतीय वायुसेना के फुटबॉल कोच हंसराज रहे। वक्ताओं ने वायुसेना की वीरता, अनुशासन और तकनीकी क्षमता पर प्रकाश डाला। देवेंद्र पहल ने कहा कि आठ अक्टूबर 1932 को स्थापित भारतीय वायुसेना आज विश्व की प्रमुख वायु सेनाओं में शामिल है। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान वायुसेना की आधुनिक क्षमता की सराहना की।





रीति-रिवाज के प्रति वर्तमान पीढ़ी का विमुख होना चिंताजनक

नारनौल। संस्कृतिक अहीरवाल की ओर से सिहमा में खंड स्तर पर एक प्रबुद्ध नागरिक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। सिहमा खंड संयोजक मास्टर धर्मपाल गुलावला ने गोष्ठी में आए लोगों का स्वागत किया। जिला मीडिया प्रभारी शीशपाल यादव ने कहा विचार गोष्ठी के माध्यम से अहीरवाल की प्राचीन संस्कृति और रीति-रिवाज के प्रति वर्तमान पीढ़ी का विमुख होना चिंता का विषय है, इसी विषय को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सिहमा खंड के सभी प्रबुद्ध नागरिकों को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. नीलम यादव प्रोफेसर केंद्रीय विश्वविद्यालय पाली रही। अध्यक्षता सांस्कृतिक अहीरवाल के निदेशक सत्यव्रत शास्त्री ने की। कार्यक्रम का आयोजन सिहमा स्थित बाबा खेतानाथ शिक्षण संस्थान के सभागार में किया गया।

श्रीनंद ब्रह्मचारी गोशाला में लगाई सवामणी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

पितृ अमावस्या के पावन पर्व पर श्री नंद ब्रह्मचारी गोशाला कुलताजपुर में गोभक्तों की ओर से 11 सवामणियां लगाई गई। इस अवसर पर अनिल यादव, फरीदाबाद ने लगभग 38 क्विंटल तूड़ा दान किया। वहीं सतपाल यादव, एडवोकेट मंदीप सिंह, कैप्टन वेदसिंह यादव, सुरेश यादव, रामरख आकोली, शिवकुमार मेहता, सतीश भल्ला, पवन सोनी, किशोर बिगोपुर, रोहतास अग्रवाल, धर्मवीर सिंह और मुकेश अग्रवाल की ओर से लगभग 20 क्विंटल हरी सब्जियों की सवामणी लगाई गई।

इसके अतिरिक्त दीपक मेहता की ओर से एक कट्टा खल, विपुल महत्ता की ओर से एक कट्टा खल तथा पूनम साड़ी की ओर से एक कट्टा मेथी भेंट की गई। दौलतराम के परिवार की ओर से गोशाला में लोहे की अलमारी तथा डॉ. पवन यादव की ओर से दवाइयां भेंट की गई। गोशाला प्रधान अरुण कौशिक ने कहा कि पितृ अमावस्या पर गोमाता की सेवा करना पुण्य का कार्य है। जिला गोशाला संघ के महासचिव सुनील नांगलिया मित्रपुरा ने कहा कि पितृ अमावस्या के पावन अवसर पर गोभक्तों द्वारा की गई सेवा सराहनीय है।

इस मौके पर गोशाला प्रबंधक मुकेश वालिया, डॉ. राम सज्जन, शिवकुमार मेहता, कस्तूरी लाल, रमेश यादव, राजेश यादव, गजेंद्र नंबरदार, सज्जन सिंह, दलीप यादव, सुभाष शर्मा, प्रकाश सैनी, रामचंद्र योगाचार्य, पवन सोनी, किशोर बिगोपुर, रामरखी यादव आकोली, प्रमोद मेहता, रामवतार मेहता, महेश मेहता, सुमित, चांदनाथ, मोहनलाल नंबरदार, नरेंद्र सरपंच, भूपेंद्र, सोनू, अमन यादव आदि उपस्थित रहे।



नारनौल। गोवंश के लिए चारा लेकर आए सेवक। फोटो : हरिभूमि

पौधे लगाओ पर्यावरण बचाओ

सूचना

मैं, बिजेन्द्र सिंह पुत्र श्री डुंगाराम निवासी नजदीक शनि मंदिर नांगल चौधरी तहसील नांगल चौधरी जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) बयान करता हूँ कि मेरी लड़की जिया मेरे कहने सुनने से बाहर है और अपनी मनमानी करती है। इसलिए मैं उसको अपनी चल अचल सम्पति से बेदखल करता हूँ। भविष्य में उससे लेनदेन करने वाला स्वयं जिम्मेदार होगा ।

NOTICE

I, Service No 15433896M, Rank HAV (Nur. Asst) Ravinder Singh C/o MH Lansdowne, Uttrakhand, C/o 56 APO declare that in my service record my father name wrongly recorded as Subhash Chand, correct name Subhash vide affidavit no OCI2026J3, dated 09.10.2026

NOTICE

I, Service No 15433896M, Rank HAV (Nur. Asst) Ravinder Singh C/o MH Lansdowne, Uttrakhand, C/o 56 APO declare that in my service record my mother name wrongly recorded as Daya Devi, correct name Daya Kaur vide affidavit no OCI2026J2, dated 09.10.2026

महामंडलेश्वर राघवेंद्र भारती ने आर्यव्रत सेवा न्यास पहुंचकर दिया निमंत्रण

जिले में निकलेगी नशा मुक्त भारत यात्रा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

महेंद्रगढ़ जिले में नशे के खिलाफ जनजागरण को व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाने के उद्देश्य से बड़ी नशा मुक्त भारत यात्रा निकालने की तैयारी की जा रही है। प्रस्तावित यात्रा जिले की चारों विधानसभा क्षेत्रों से होकर गुजरेगी, ताकि अधिक से अधिक लोगों को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक किया जा सके और समाज को इस अभियान से जोड़ा जा सके।

इसी सिलसिले में महामंडलेश्वर राघवेंद्र भारती आर्यव्रत सेवा न्यास के कार्यालय पहुंचे और न्यास को नशा मुक्त भारत यात्रा का निमंत्रण दिया। यात्रा को लेकर हुई इस पहल के बाद जिले में नशा मुक्ति के लिए सामाजिक संस्थाओं और प्रशासन के बीच समन्वय की संभावनाएं भी मजबूत हुई हैं।

यात्रा का उद्देश्य लोगों तक नशे के दुष्परिणामों का संदेश पहुंचाना और युवाओं को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करना है। चारों विधानसभा क्षेत्रों को यात्रा से जोड़ने की योजना के माध्यम से जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जनजागरण का दायरा बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा।



नारनौल। महामंडलेश्वर राघवेंद्र भारती से आशीर्वाद लेते विनीत पिलानिया।

पुलिस के साथ मिलकर न्यास चलाएगा मुहिम

आर्यव्रत सेवा न्यास के संस्थापक विनीत पिलानिया ने कहा कि न्यास जल्द ही जिले में पुलिस द्वारा चलाए जा रहे नशा मुक्ति अभियान के साथ मिलकर इस मुहिम को गति देगा। उन्होंने सामाजिक स्तर पर नशे के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने और अधिक से अधिक लोगों को अभियान से जोड़ने की दिशा में काम करने की बात कही। नशे की समस्या से निपटने के लिए केवल जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि परिवारों, युवाओं, सामाजिक संगठनों और प्रशासन की निरंतर भागीदारी भी जरूरी है। ऐसे में प्रस्तावित नशा मुक्त भारत यात्रा और पुलिस अभियान के बीच समन्वय जिले में नशे के खिलाफ जनजागरण को व्यापक बनाने में अहम भूमिका निभा सकता है। अब यात्रा की तारीख, विस्तृत मार्ग और कार्यक्रम की आधिकारिक रूपरेखा तय होने के बाद अभियान की आगे की तस्वीर स्पष्ट होगी।

बच्चों ने किया मेडिकल कॉलेज का भ्रमण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वास्तविक जीवन के अनुभव विद्यार्थियों के ज्ञान को नई दिशा देते हैं। इसी उद्देश्य को लेकर द स्ट्रीट लाइट स्कॉलर्स फाउंडेशन (पूर्व में स्लम एरिया टैलेंट) के बच्चों ने कोरियावास स्थित महर्षि च्यवन राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय एवं राव तुलाराम अस्पताल का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस दौरान बच्चों को चिकित्सा जगत, अस्पताल की कार्यप्रणाली और स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त करने का अवसर मिला। इस शैक्षणिक भ्रमण का मुख्य उद्देश्य बच्चों को किताबी ज्ञान से आगे बढ़कर व्यावहारिक जानकारी देना, चिकित्सा क्षेत्र के प्रति उनकी समझ विकसित करना तथा भविष्य में डॉक्टर, नर्सिंग ऑफिसर और अन्य स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए प्रेरित करना था। भ्रमण के दौरान अस्पताल की ओर से नर्सिंग ऑफिसर भारत सर बच्चों के साथ मौजूद रहे। उन्होंने पूरे भ्रमण में बच्चों का मार्गदर्शन किया और अस्पताल के विभिन्न विभागों की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी। संस्था के संस्थापक हन्नी गुप्ता ने बताया कि आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियां किसी बच्चे के सपनों की सीमा तय नहीं करनी चाहिए। इस मौके पर संस्था की तरफ से अतर सिंह सीलन व डॉ. अनूप मौजूद रहे।



नारनौल। मेडिकल कॉलेज का भ्रमण करने आए बच्चे। फोटो : हरिभूमि

खबर संक्षेप



गोपाल गोशाला में विशेष पितृ हवन

नारनौल। धर्म तथा राष्ट्र की रक्षा करते हुए अपने प्राण देने वाले अज्ञात योद्धाओं एवं सनातन धर्म के रक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु पितृ पक्ष की अमावस्या पर गोपाल गोशाला में विशेष पितृ हवन एवं श्राद्ध-तर्पण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह आयोजन इलाके में पहली बार इस भाव के साथ किया गया कि जिन वीरों का नाम इतिहास में नहीं, उनके कल्याण एवं मोक्ष हेतु श्राद्ध किया जाए। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम हरियाणा प्रदेश के महासचिव राकेश चौहान की मन की उपज थी, जिन्होंने 1642 एवं 1857 के संदर्भ में नारनौल के विस्मृत इतिहास को सामने रखा।

श्री गोशाला धौलपोश आश्रम का वार्षिकोत्सव

महेंद्रगढ़। श्री गौशाला धौलपोश आश्रम में भंडारे एवं वार्षिकोत्सव का आयोजन श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ किया गया। इस अवसर पर धार्मिक कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत वार्षिकोत्सव की पूर्व संध्या पर सुंदरकांड पाठ एवं भजन-सत्संग का आयोजन किया गया। शुक्रवार को साधु-संतों को भोजन करवाने तथा विधिवत गोपूजन के साथ विशाल भंडारे का शुभारंभ हुआ। भंडारे में कई हजार श्रद्धालुओं ने पहुंचकर प्रसाद ग्रहण किया और गौसेवा के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विधायक कंवर सिंह यादव के पुत्र राहुल यादव हवन-यज्ञ में शामिल हुए।

सर्वपितृ अमावस्या पर गोशाला में उमड़े श्रद्धालु

कनीना। पितृ पक्ष की सर्वपितृ अमावस्या के अवसर पर शनिवार को महंत लक्ष्मण गिरि गोशाला बूचावास में श्रद्धालु पहुंचे। इस दौरान उन्होंने गोवंश की विधिवत सेवा की तथा उन्हें चारा, गुड़ खिलाया। गोशाला संचालक महंत विट्ठलगिरी महाराज ने बताया कि हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, सर्वपितृ अमावस्या के दिन गोसेवा का विशेष आध्यात्मिक महत्व माना गया है। सुनील कुमार दलीप सिंह, रजत आदि मौजूद रहे।

मंढाणा में पेयजल सप्लाई बंद होने से रोष, जल्द बहाल करने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

गांव मंढाणा में अनुसूचित जाति (एससी) समाज के लोगों को पेयजल की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। समाज के लोगों का आरोप है कि उनके क्षेत्र में वाटर सप्लाई बंद पड़ी है, जिसके कारण पीने के पानी की किल्लत बढ़ गई है। इस समस्या को लेकर 10 अक्टूबर को ग्रामीणों में रोष देखने को मिला। सामाजिक कार्यकर्ता चांदराम भोड़ीवाल के नेतृत्व में समाज के लोग एकत्रित हुए और बंद पड़ी पेयजल सप्लाई को नियमित रूप से चालू करवाने की मांग उठाई। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द समस्या का समाधान नहीं किया गया तो वे नारनौल-बहरोड़ रोड जाम करने को मजबूर होंगे।



नारनौल। पेयजल समस्या को लेकर रोष व्यक्त करते अनुसूचित जाति के लोग।

ग्रामीणों का कहना है कि पीने का पानी हर परिवार की बुनियादी जरूरत है। वाटर सप्लाई बंद रहने से लोगों को रोजमर्रा के कामकाज में परेशानी झेलनी पड़ रही है। विशेष रूप से बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों को पानी की व्यवस्था करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों ने मांग की कि संबंधित विभाग इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए बंद पड़ी सप्लाई को जल्द बहाल करे, ताकि परिवारों को राहत मिल सके। ग्रामीणों ने उम्मीद जताई कि उनकी मांग पर जल्द कार्रवाई होगी और गांव में बंद पड़ी पेयजल सप्लाई बहाल होने से समस्या का समाधान हो सकेगा।

समाधान नहीं हुआ तो सड़क जाम की चेतावनी

पेयजल समस्या को लेकर एकत्रित हुए ग्रामीणों ने स्पष्ट किया कि उनकी मांग बंद पड़ी वाटर सप्लाई को चालू करवाने और नियमित पेयजल उपलब्ध कराने की है। लोगों ने चेतावनी दी कि यदि उनकी समस्या का जल्द समाधान नहीं किया गया तो वे नारनौल-बहरोड़ रोड पर जाम लगाने का कदम उठा सकते हैं। ग्रामीणों ने प्रशासन और संबंधित विभाग से मामले में जल्द हस्तक्षेप कर राहत दिलाने की मांग की।

ये रहे मौजूद

सुनील, विक्की, रवि ठेकेदार, विकास, निर्मला देवी, सुमन देवी, मोना देवी, विद्या देवी, बबली देवी, रामकला देवी, लक्ष्मण ठेकेदार सहित अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

बुजुर्गों और बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर जताई चिंता

सामाजिक कार्यकर्ता चांदराम भोड़ीवाल ने कहा कि गांव में एससी समाज के लोगों के बीच पेयजल संकट को लेकर भारी रोष है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से मांग की कि वाटर सप्लाई को जल्द से जल्द सुचारू किया जाए और लोगों को नियमित रूप से पीने का पानी उपलब्ध करवाया जाए। उनका कहना है कि पानी की कमी के कारण लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही है। ऐसे में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना जरूरी है, ताकि लोगों को दूषित पानी के इस्तेमाल से होने वाली बीमारियों के खतरे से बचाया जा सके। उन्होंने कहा कि समस्या का समाधान समय रहते किया जाना चाहिए। ग्रामीणों को बुनियादी सुविधा के लिए बार-बार परेशान न होना पड़े, इसके लिए पेयजल व्यवस्था को नियमित बनाए रखना आवश्यक है। उन्होंने संबंधित विभाग से मांग की कि सप्लाई बंद होने के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर किया जाए और भविष्य में ऐसी स्थिति दोबारा पैदा न हो, इसके लिए भी उचित कदम उठाए जाएं।

बाजरे की बंपर आवक को देखते हुए अनाज मंडी प्रशासन ने बनाई व्यवस्था

मंडियों में अब गांवों के अनुसार बाजरे की खरीद, शेड्यूल जारी

- खरीद को आसान बनाने के लिए तैयार किया गया रोस्टर
- मार्केट कमेटी प्रशासन ने किसानों से की सहयोग की अपील

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

मंडियों में इन दिनों बाजरे की बंपर आवक को देखते हुए अनाज मंडी प्रशासन ने खरीद में गांवों का शेड्यूल निर्धारित करने का निर्णय लिया है, ताकि किसानों को लंबा इंतजार न करना पड़े और खरीददारों का समय–समय पर उठान भी होता रहे। खरीद को सुचारू रूप से चलाने के लिए नई अनाज मंडी नारनौल में 12 अक्टूबर के लिए गांवों का रोस्टर जारी कर दिया गया है।

जानकारी देते हुए सचिव एवं कार्यकारी अधिकारी मार्केट कमेटी नुकुल यादव ने बताया कि मंडी में अत्यधिक संख्या में किसानों के आगमन के कारण खरीद व भुगतान प्रक्रिया बाधित हो रही थी, जिसके समाधान के लिए यह रोस्टर तैयार किया गया है। अब 12 अक्टूबर को अब्बदुल्ला नगर, अकबरपुर रामू, अमरपुर जोरासी, आजम नगर, बडगांव, बदोपुर, बलाहां कलां, बलाहा खुर्द, बापडोली गांवों के किसानों की बाजार खरीद की जाएगी। 13 अक्टूबर को बड़कोदा, बांस किरारोद उमराबाद, बसीरपुर, भांखरी, भुषण कलां, भूषण खुर्द, चिडांलिया, डेरोली अहीर, दनचोली, तथा 14 अक्टूबर को ढाणी बाठोठा, धानोता, धरसूं, डोहर कलां, डोहर खुर्द, दुबलाना, फैजाबाद, फैजलीपुर, गहली गांवों की बाजरे की खरीद की जाएगी। मार्केट कमेटी प्रशासन ने सभी किसानों से अनुरोध किया है कि वे अव्यवस्था से बचने के लिए अपने गांव के निर्धारित शेड्यूल अनुसार ही मंडी में बाजरा बेचने आएं ताकि खरीद कार्य सुचारु रूप से संपन्न हो सके।



नारनौल। मंडी में रखा बाजरा। फोटो : हरिभूमि

यह है गांवों के लिए जारी शेड्यूल

15 अक्टूबर को घाटाशेर, गोढ, हाजीपुर, हमीदपुर, हसनपुर, हुडिना, जादुपुर, जैलाफ, जाखणी, 16 अक्टूबर को कोरियावास, कांवी, कारोली, कारोता, खामपुरा, खानपुर, खासपुर, खटोटी खुर्द, खटोटी सुल्तानपुर, 17 अक्टूबर को सोमवार से शुक्रवार तक के बचे हुए किसानों के बाजरे की खरीद की जाएगी। 18 अक्टूबर को रविवार का अवकाश होने के कारण कोई खरीद कार्य नहीं होगा। 19 अक्टूबर को खत्रीपुर, खोड़मा, किरारोद अफगान, कोजिदां, कुलताजपुर, कुतबापुर, लहरोदा, लुत्फपुर, महरमपुर, 20 अक्टूबर को मकसूसपुर, मंढाणा, मंडलाणा, मारोली, मेई, मीरपुर, मित्रपुरा, मोहम्मदपुर हमीद खां, 21 अक्टूबर को मुकंदपुरा, मुरारीपुर, नांगल काठा, नांगल शालू, नांगतिहाड़ी, नारनौल, नसीबपुर, निवाजनगर, नूनी अव्वल, 22 अक्टूबर को नूनी कलां, पटीकरा, रघुनाथपुरा, रामबास, रामपुरा, रसूलपुर, शहरपुर, सेका, शाहपुर-अव्वल, 23 अक्टूबर को शाहपुर, श्योनाथपुरा, शोभापुर, सिलारपुर मेहता, टहला, ताजीपुर, तलोट, थाना तथा 24 अक्टूबर को सोमवार से शुक्रवार तक के बचे हुए किसानों के बाजरे की खरीद की जाएगी। 25 अक्टूबर को साप्ताहिक अवकाश रहेगा।

अटेली मंडी में 12 से 17 अक्टूबर तक का गांवों का रोस्टर जारी

मंडी अटेली। नई अनाज मंडी अटेली में बाजरे की सरकारी खरीद को व्यवस्थित ढंग से करवाने के लिए मार्केट कमेटी ने गांववाइज रोस्टर जारी किया है। इसके अनुसार 12 से 17 अक्टूबर तक अलग-अलग गांवों के किसान निर्धारित तिथि पर अपनी बाजरे की फसल बेचने के लिए मंडी पहुंच सकेंगे। बाजरे की खरीद 11 क्विंटल प्रति एकड़ के हिसाब से सरकारी नियमों के अनुसार की जाएगी। मार्केट कमेटी अटेली की ओर से जारी प्रेस नोट में किसानों से अपील की गई है कि वह रोस्टर के अनुसार निर्धारित दिन ही अपनी बाजरे की फसल लेकर मंडी आएं, ताकि खरीद प्रक्रिया सुचारू रूप से चल सके और किसानों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। किसानों को सुबह आठ बजे से सायं पांच बजे तक अपनी फसल बेचने का समय दिया गया है। रोस्टर के अनुसार सोमवार 12 अक्टूबर को छापड़ा सलीमपुर, सराय बहादुर, सुराणी, मिर्जापुर, बाछौद, कुंजपुरा, श्यामपुरा, सैदपुर के किसान बाजरा लेकर मंडी पहुंचेंगे। 13 अक्टूबर को कांटी, खेड़ी, रामपुरा, नावढ़ी, बिहाली, राजपुरा, पृथ्वीपुरा व नांगल गांवों के किसानों की फसल खरीदी जाएगी। 14 अक्टूबर को बजाड़, गणियार, चंदपुरा, सुजापुर, अटेली, बैगपुर, उनिंदा, धनौन्दा, गोकलपुर, किसान नगर के किसान खरीदी जाएगी। वहीं 15 अक्टूबर को मोहल्ड़ा, राता कलां, राता खुर्द, खैराणी, गढ़ी, महासर, कारिया, बौचड़िया, हसनपुर, सलीमपुर गांवों के किसानों खरीदी जाएगी। 16 अक्टूबर को सिलारपुर, मोहनपुर, कटकई, गुजरवास, तिगरा, भोड़ी, गिरधरपुर, तोबड़ा फतनी के किसानों की खरीद होगी। 17 अक्टूबर को अटाली, नीरपुर, सागरपुर, भीलवाड़ा, ताजपुर, खोड़, ढुलोठ जाट, खारीवाड़ा गांवों के किसान बाजरा लेकर मंडी पहुंचेंगे।

साधन पर नंबर प्लेट अवश्य लगाएं



अटेली मार्केट कमेटी चेयरमैन दिनेश जेलदार ने कहा कि मंडी में गेट पास कटवाने के लिए अपने साधन पर नंबर प्लेट अवश्य लगाकर लाएं। जो किसान स्वयं मंडी नहीं आ सकते, वह मेरी फसल-मेरा ब्यौरा पोर्टल पर अपना नामित व्यक्ति जोड़ सकते हैं। निर्धारित रोस्टर से बाहर मंडी में आने वाले किसानों को गेट पास जारी नहीं किया जाएगा। कमेटी ने किसानों से निर्धारित तिथि का पालन करने और खरीद प्रक्रिया में सहयोग करने की अपील की है।



नारनौल। प्रेस कांफ्रेंस करते हुए। फोटो : हरिभूमि

यूजीसी के नए नियम और जातिगत आरक्षण के मुद्दे पर होगी महापंचायत

- सवर्ण समाज के लोगों से महापंचायत में पहुंचने की अपील

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

यूजीसी के नए नियमों की वापसी, एससी-एसटी एक्ट के कथित दुरुपयोग और जातिगत आरक्षण के मुद्दों को लेकर 12 अक्टूबर को भिवानी में महापंचायत आयोजित की जाएगी। इसके लिए शनिवार को मोहल्ला चौधरीयान स्थित गौड़ ब्राह्मण सभा में विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने प्रेसवार्ता कर लोगों से महापंचायत में शामिल होने की अपील की। साथ ही 15 अक्टूबर को नारनौल में सवर्ण समाज एकता मंच की ओर से ज्ञापन देने के कार्यक्रम में भी अधिक से अधिक लोगों से पहुंचने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर ब्राह्मण समाज से डॉ. अशोक दीक्षित व कैप्टन ऋषि प्रकाश अत्री ने कहा कि अभियान किसी जाति या समाज के विरोध में नहीं है, बल्कि संबंधित मुद्दों पर अपनी चिंताओं को सरकार तक पहुंचाने के उद्देश्य से चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षण संस्थानों में भेदभाव की शिकायतों पर गंभीरता से कार्रवाई होनी चाहिए।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर सभा के उपप्रधान रामानंद वशिष्ठ, सचिव कृष्ण शर्मा ठेकेदार, अधिवक्ता कृष्ण शर्मा, विजय गोस्वामी, अमित पांडेय, अधिवक्ता गोविंद शर्मा, गोपाल शाण्डिल्य, उमाकांत छक्कड़, सन्नी छक्कड़, प्रवीण ताजपुर व सरोज बाला सहित अन्य प्रतिनिधि मौजूद रहे।

पाठ्य सामग्री वितरित कर मनाया जन्मदिन

नांगल चौधरी। जन्मदिन पर फिजूलखर्ची करने के बजाय जरूरतमंद बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाने की पहल समाज के लिए प्रेरणा बन सकती है। इसी मकसद से दिवंगत पिता वेदप्रकाश की जयंती के अवसर पर राव जयमल मैमोरियल ट्रस्ट के चेयरमैन डॉ. नरेश यादव ने विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री वितरित करके मनाया। साथ ही उन्हें शारीरिक स्वच्छता और सात्विक भोजन के लिए प्रेरित किया।



न्यूज डायरी



दुर्गा पूजा महोत्सव को लेकर निमंत्रण यात्रा

नारनौल। टाइगर क्लब परिवार के दुर्गा पूजा महोत्सव को लेकर शनिवार को मां चामुंडा देवी मंदिर तक निमंत्रण यात्रा निकाली गई। शुभारंभ पुरानी कचहरी मैदान से हुआ, जहां से ध्वजा यात्रा पुल बाजार, मानक चौक, आजाद चौक होते हुए मां चामुंडा देवी मंदिर परिसर पहुंची। मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना कर ध्वजा चढ़ाई गई। मां चामुंडा देवी को दुर्गा पूजा महोत्सव का निमंत्रण दिया गया। इसके बाद ध्वजा यात्रा किला रोड, बस स्टैंड, महावीर चौक और मुख्य बाजार से होती हुई पुनः पुरानी कचहरी मैदान पहुंची। यात्रा को भाजपा हरियाणा राज्य महिला आयोग की सदस्या भारती सैनी ने रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि टाइगर क्लब द्वारा आयोजित यह यात्रा धार्मिक आस्था और सामाजिक एकता का प्रतीक है।

100 मीटर दौड़ में साधना प्रथम रही

मंडी अटेली। महंत खेतानाथ राजकीय महाविद्यालय सिहमा में दूसरी वार्षिक एथलेटिक प्रतियोगिता का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और खेल भावना, अनुशासन तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन का परिचय दिया। इस प्रतियोगिता का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य डा. सुनील कुमार, उप प्राचार्य डा. लक्ष्मीनारायण, राजकीय महिला महाविद्यालय पाली के प्राचार्य डॉ. कर्ण सिंह ने संयुक्त रूप से किया। इस दौरान 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर दौड़ के साथ गोला फेंक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। प्रतियोगिताओं का संचालन महाविद्यालय के खेल प्रभारी तनुराग सिंघल और रितेश भारद्वाज ने किया। महिला वर्ग की 100 मीटर दौड़ में साधना ने प्रथम, प्रिया ने द्वितीय और मुस्कान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर दौड़ में प्रिया प्रथम, अर्चना द्वितीय और मुस्कान तृतीय स्थान पर रहीं। 400 मीटर दौड़ में प्रिया ने प्रथम, साधना ने द्वितीय और अर्चना ने तृतीय स्थान हासिल किया। गोला फेंक प्रतियोगिता में प्रिया प्रथम, मेनका द्वितीय रही।



विजय इंटरनेशनल स्कूल में अभिभावक-शिक्षक बैठक हुई



महेंद्रगढ़। विजय इंटरनेशनल स्कूल बालाना में शनिवार को अभिभावक-शिक्षक बैठक संपन्न हुई। बैठक का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, अनुशासन, उपस्थिति और सर्वांगीण विकास को लेकर अभिभावकों एवं शिक्षकों के बीच प्रभावी संवाद स्थापित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय सचिव महेंद्र सिंह द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। विद्यार्थियों के बेहतर प्रदर्शन के लिए नियमित अध्ययन, समय प्रबंधन तथा घर और विद्यालय के बीच बेहतर समन्वय अत्यंत आवश्यक है। बैठक में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने भाग लिया। अभिभावकों ने कक्षा अध्यापकों से अपने बच्चों की विषयवार उपलब्धियों, रुचियों एवं सुधार के क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

जिला स्तरीय युवा ग्राम पंचायत प्रतियोगिता कल से

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) की ओर से जिले में 'जिला स्तरीय युवा ग्राम पंचायत 2026' प्रतियोगिता के आयोजन का बिगुल बजा दिया गया है। संस्थान के डीआरयू विंग के प्रभारी नरेश गोयल के अनुसार एससीईआरटी हरियाणा के निर्देशों की अनुपालना और जिला शिक्षा अधिकारी डॉ विश्वेश्वर कौशिक के नेतृत्व में यह प्रतियोगिता 12 से 16 अक्टूबर तक जिले के विभिन्न खंडों के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित की जाएगी।

प्राचार्य डाइट की ओर से जारी आदेश के अनुसार प्रतियोगिता के सफल संचालन एवं निष्पक्ष मूल्यांकन के लिए पांच सदस्यीय ज्यूरी बोर्ड का भी गठन किया गया है। इसमें डॉ. राकेश कुमार (डाइट समन्वयक), डॉ संजय शर्मा (प्रवक्ता राजनीति राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अकबरपुर), जितेंद्र यादव प्रवक्ता (डाइट), डॉ. नरेश कुमार (डाइट) तथा डॉ. किरण यादव (डाइट) को शामिल किया गया है।

यह रहेगा तिथि वार एवं खंडवार शेड्यूल

12 अक्टूबर सोमवार को खंड नारनौल के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोरियावास

13 अक्टूबर को खंड नांगल चौधरी के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छापडा बीबीपुर।

14 अक्टूबर को खंड कनीना के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बूचावास

15 अक्टूबर को खंड महेंद्रगढ़ के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बेरी

16 अक्टूबर को खंड अटेली के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ताजपुर में प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी।

मानद उपाधि हासिल करने वाले को किया सम्मानित

नारनौल। प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट की ओर से शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में मानद उपाधि से विभूषित होने पर प्रख्यात संगीत शिक्षक मोहन सागर व जोरासी निवासी प्रवक्ता ललित कुमार को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. संजय शर्मा, अमित गुप्ता तथा पूर्व जिला बाल कल्याण अधिकारी विपिन शर्मा ने दोनों विभूतियों को अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर ट्रस्ट द्वारा शिक्षा, संगीत एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान की सराहना करते हुए इसे समाज के लिए प्रेरणादायी बताया। इस मौके पर भीमसेन शर्मा, नरोत्तम सोनी, सुरेस शर्मा, राम सिंह मधुर, अमीचंद सैनी, दिनेश शर्मा प्राचार्य, रविन्दर कुमार प्राचार्य उपस्थित रहे।

श्री ओम साईंराम किड्स स्कूल में हुई बैठक



महेंद्रगढ़। शहर के मोहल्ला नयाबास में हनुमान मंदिर के निकट मोती हाई स्कूल के पुराने भवन में चल रहे श्री ओम साईंराम किड्स प्ले स्कूल में अभिभावक टीचर मीटिंग हुई। मीटिंग का मुख्य उद्देश्य बच्चों की शैक्षणिक प्रगति, व्यवहार, अनुशासन एवं उनके सर्वांगीण विकास को लेकर अभिभावकों और शिक्षकों के बीच बेहतर संवाद स्थापित करना रहा। विद्यालय चेयरमैन रमेश सैनी एवं चेयरपर्सन निशा सैनी ने बताया कि विद्यालय में पेरेंट्स टीचर मीटिंग का आयोजन बच्चों की पढ़ाई, अनुशासन और सर्वांगीण विकास पर चर्चा के लिए किया जाता है। इसलिए इसमें अपने बच्चों के साथ विद्यालय के सभी अभिभावकों को भी ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर अपने विचार साझा करने चाहिए। इस मीटिंग में शिक्षिकाओं ने अभिभावकों से बच्चों की पढ़ाई एवं विद्यालय में उनकी गतिविधियों से संबंधित जानकारी सांझा की, वहीं अभिभावकों ने भी बच्चों की शिक्षा एवं विकास को लेकर अपने सुझाव और विचार साझा किए।

स्पर्धा | कृष्णनगर कॉलेज की खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न

नितिन और सपना बने बेस्ट एथलीट

- जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी डॉ. अमित रहे मुख्य अतिथि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

राजकीय महाविद्यालय कृष्णनगर में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शनिवार को उत्साहपूर्ण माहौल में समापन हुआ। समापन समारोह में जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी डॉ. अमित चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। महाविद्यालय के प्रवक्ता डॉ. अजीत सिंह ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न एथलेटिक्स स्पर्धाओं में अपनी खेल प्रतिभा, शारीरिक दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में छात्र वर्ग में नितिन को बेस्ट एथलीट तथा छात्रा वर्ग में सपना को बेस्ट एथलीट चुना गया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सुमन यादव ने मुख्य अतिथि डॉ. अमित चौधरी का विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों से परिचय करवाया। उन्होंने प्रतियोगिता के सफल आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि खेल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का अभिन्न हिस्सा हैं। खेलों से शारीरिक स्वास्थ्य के साथ आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, धैर्य और टीम भावना का विकास होता है। मुख्य अतिथि डॉ. अमित चौधरी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल जीवन में अनुशासन, परिश्रम, समर्पण और सकारात्मक सोच विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। खेलों में सफलता के लिए नियमित अभ्यास, दृढ़ इच्छाशक्ति और निरंतर प्रयास जरूरी है। उन्होंने विद्यार्थियों को खेल भावना के साथ प्रतियोगिताओं में भाग लेने तथा जीत-हार को खेल का स्वाभाविक हिस्सा मानकर अपने प्रदर्शन में लगातार सुधार करने के लिए प्रेरित किया। दो दिवसीय प्रतियोगिता के दौरान 100, 200, 400, 800, 1500 और 5000 मीटर दौड़ के अलावा हाई जंप, लॉन्ग जंप, ट्रिपल जंप, डिस्कस थ्रो और जैवलिन थ्रो जैसी विभिन्न एथलेटिक्स स्पर्धाएं आयोजित की गईं।



नारनौल। अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट करता कॉलेज स्टाफ। फोटो : हरिभूमि

1500 मीटर दौड़ में मनीषा रही प्रथम

प्रतियोगिता में छात्र वर्ग में नितिन को बेस्ट एथलीट तथा छात्रा वर्ग में सपना को बेस्ट एथलीट चुना गया। छात्राओं की 1500 मीटर दौड़ में मनीषा ने प्रथम, सपना ने द्वितीय और आरती ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं छात्रों की 5000 मीटर दौड़ में यशदेव प्रथम, प्रिंस द्वितीय और पंकज तृतीय स्थान पर रहे। प्रत्येक स्पर्धा में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों के लिए क्रमशः 1500, 1000 और 750 रुपये के नकद पुरस्कार निर्धारित किए गए थे। इन पुरस्कारों का उद्देश्य विद्यार्थियों को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करना और उनकी मेहनत को सम्मानित करना रहा। महाविद्यालय की खेल प्रभारी एवं सहायक प्राध्यापक प्रीति यादव ने प्रतियोगिता के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

100 कुंडीय महायज्ञ में उमड़ा जनसैलाब



महेंद्रगढ़। आर्य समाज एवं वेद प्रचार मंडल के तत्वावधान में आर्य समाज मंदिर प्रांगण में दो दिवसीय भव्य आर्य महासम्मेलन का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत 100 कुंडीय महायज्ञ से हुई, जिसके ब्रह्मत्व का दायित्व आचार्य प्रद्युम्न महाराज ने संभाला और यज्ञ पुरोहित की भूमिका वेदपाल शास्त्री ने निभाई। प्रथम सत्र की अध्यक्षता वेद प्रचार मंडल के जिला प्रधान धर्मवीर सिंह आर्य खातौली ने की। विधायक कंवर सिंह यादव ने कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इस दौरान उन्होंने यज्ञ में आहुतियां डालकर समाज की सुख-समृद्धि और कल्याण की कामना की। विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि आर्य समाज की शिक्षाएं हमें सत्य, धर्म, सदाचार और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 11 अक्टूबर 2026

संस्कृति-आस्था का उल्लास
नवरात्रों के बहुरंगी उत्सव


बंगाल की पारंपरिक दुर्गा पूजा


गुजरात में नवरात्र का महत्वपूर्ण अंग-डांडिया


ओडिशा के कटक में 'चांदी मेधा' से सजी मां दुर्गा की प्रतिमा


उत्तर भारत में नवरात्र के दौरान होता है रामलीला का आयोजन

शारदीय नवरात्र विशेष

भारत के विभिन्न स्थानों में नवरात्र मनाने के अलग-अलग तरीके हैं। ये इस बात के प्रमाण हैं कि हमारी संस्कृति कितनी समृद्ध और विविधतापूर्ण है। बंगाल की कलात्मकता, गुजरात का नृत्य, दक्षिण का गोलू और मैसूर का राजसी वैभव, सब मिलकर एक ही सनातन शक्ति की आराधना करते हैं। यह विविधता ही हमारे देश की असली पहचान और सुंदरता है। आइए भारत के विभिन्न राज्यों में नवरात्रों और दुर्गा पूजा के अनूठे और मनमोहक स्वरूपों पर एक नजर डालते हैं।

आवरण कथा
शिखर चंद जैन

विविधता में एकता का महापर्व नवरात्रों में होने वाली दुर्गा पूजा, भारत के सबसे बड़े और उल्लासपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह केवल मां शक्ति की आराधना का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक, सामाजिक समरसता और उल्लास का भी जीवंत अवसर है। यद्यपि इस उत्सव का मूल भाव महिषासुर मर्दिनी मां दुर्गा की आसुरी शक्तियों पर विजय का उत्सव मनाना है, लेकिन देश के अलग-अलग राज्यों में इसे मनाने की शैलियां, परंपराएं और सांस्कृतिक रंग पूरी तरह भिन्न हैं।

बंगाल में दिखता है परंपरा-संस्कृति का संगम

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा का रूप सबसे अधिक व्यापक, भव्य और पारंपरिक होता है। यहां यह उत्सव केवल पांच दिनों का नहीं, बल्कि पूरे साल की तैयारी का परिणाम होता है। पारंपरिक बंगाली घरों और पुराने अभिजात्य परिवारों (राजबाड़ी की पूजा) में आज भी मां दुर्गा की 'एकचाला' (एक ही अर्द्धवृत्त फ्रेम में सभी देवताओं की मूर्तियां) प्रतिमा स्थापित की जाती है। कोलकाता और अन्य शहरों में समकालीन कला, सामाजिक संदेशों या प्राचीन मंदिरों की प्रतिकृतियों पर आधारित विशाल पंडाल बनाए जाते हैं, जिन्हें देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। महाष्टमी के दिन नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं को मां दुर्गा का स्वरूप मानकर उनकी विशेष पूजा की जाती है, जो नारी शक्ति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। धुनुची (धूप और नारियल के छिलकों से सुलगता पात्र) के साथ किया जाने वाला ऊर्जावान धुनुची नृत्य यहां का मुख्य आकर्षण है। वहीं, विजया दशमी के दिन विवाहित महिलाएं मां को सिंदूर अर्पित करने के बाद आपस में सिंदूर लगाकर सुखद भविष्य की कामना करती हैं।


महाराष्ट्र में नवरात्र के दौरान 'भोंडाला' खेलती महिलाएं

ओडिशा-असम में शक्तिपीठों की आराधना

पूर्वी भारत के राज्यों ओडिशा और असम में दुर्गा पूजा का अपना ही विशिष्ट और प्राचीन स्वरूप देखने को मिलता है। ओडिशा के कटक शहर में दुर्गा पूजा के दौरान मां की मूर्तियों के पीछे शुद्ध चांदी के कलात्मक मुकुट और झांकियां बनाई जाती हैं, जिन्हें 'चांदी मेधा' कहा जाता है। यहां का विसर्जन जुलूस अपनी भव्यता और संगीत आयोजन के लिए प्रसिद्ध है। जबकि असम में कामाख्या मंदिर और शक्तिपीठों के प्रभाव के कारण यहां मां दुर्गा की पूजा तांत्रिक और पारंपरिक विधि-विधान से की जाती है। यहां 'अंजली' और 'महाप्रसाद' वितरण का विशेष महत्व होता है।

गुजरात में होता है आयोजित गरबा-डांडिया का महाउत्सव

गुजरात में नवरात्रों में मां अंबा और मां दुर्गा की आराधना नृत्य और संगीत के माध्यम से की जाती है। नवरात्रों में युवक-युवतियां पारंपरिक परिधानों में सजकर मां की ज्योत (गरबी) के चारों ओर तालियों और लोकगीतों के साथ गरबा और डांडिया खेलते हैं। यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप का सबसे बड़ा मंच बन जाता है, जहां युवा से लेकर बुजुर्ग तक पूरी ऊर्जा के साथ शामिल होते हैं।

महाराष्ट्र में होती है घटस्थापना और शस्त्र पूजा

महाराष्ट्र में नवरात्र और विजया दशमी का पर्व लोकमान्य तिलक द्वारा पुनर्जीवित सार्वजनिक गणेशोत्सव की तरह ही सामाजिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है। अश्विन प्रतिपदा के दिन घरों में कलश स्थापना (घटस्थापना) और नौ दिनों तक अखंड दीप प्रज्वलित करने की परंपरा है। महाराष्ट्र में महिलाओं और विशेषकर युवतियों के लिए 'भोंडला' या 'हदस्तोत्सव' खेलने की अनूठी परंपरा है, जिसमें हाथी के चारों ओर घेरा बनाकर लोकगीत गाए जाते हैं। विजया दशमी के दिन यहां शमी के पत्तों (जिसे स्वर्ण माना जाता है) को एक-दूसरे को देकर शुभकामनाएं दी जाती हैं। इस अवसर पर औजारों तथा हथियारों की पूजा भी की जाती है।

दक्षिण भारत की शान है बोम्माइ गोलू और शाही दशहरा

दक्षिण भारत (विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश) में दुर्गा पूजा का स्वरूप कला और शाही इतिहास से जुड़ा हुआ है। तमिलनाडु और कर्नाटक में नवरात्र के दौरान घरों में सीढ़ीनुमा रैक बनाकर देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं और जीवन से जुड़ी गुड़ियों (बोम्माइ) को सजाया जाता है। इसे 'गोलू' कहा जाता है' जहां महिलाएं एक-दूसरे के घर जाकर हल्दी-कुमकुम और उपहार का आदान-प्रदान करती हैं। मैसूर पैलेस में मनाया जाने वाला दशहरा पूरी दुनिया में मशहूर है। यहां विजया दशमी के दिन सजे-धजे हाथियों की सवारी निकाली जाती है, जिसमें मां चामुंडेश्वरी की स्वर्ण प्रतिमा को हाथी पर विराजमान कर भव्य जुलूस निकाला जाता है।


दक्षिण भारत में नवरात्र के दौरान बोम्माइ गोलू की सजावट

उत्तर भारत में रामलीलाओं की धूम

उत्तरी भारत में नवरात्रों का समापन रावण दहन और रामलीला के साथ विजया दशमी के रूप में मुख्य रूप से होता है। विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश में इस दौरान जगह-जगह रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही इस परंपरा का क्रेज आज भी है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू घाटी में मनाया जाने वाला दशहरा उत्सव बेहद अनूठा है। यहां सात दिनों तक स्थानीय देवी-देवताओं की पालकियों की भव्य रथ यात्रा निकलती है। यह उत्सव तब शुरू होता है, जब देश के बाकी हिस्सों में दशहरा समाप्त हो जाता है। यहां मां दुर्गा के साथ भगवान रघुनाथ की पूजा का मुख्य विधान है। *

सृष्टि का मूल आधार है 'शक्ति'। शक्ति की यह आराधना केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता जितनी ही प्राचीन और वैश्विक है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक मातृ शक्ति को नाम-तरीकों से पूजा जाता रहा है।

दुनिया भर में शक्ति पूजा
स्वरूप-मान्यताएं हैं अलग-अलग

आस्था / अंजू जैन



भारतीय उपमहाद्वीप को शक्ति पूजा का वैश्विक उद्गम केंद्र माना जा सकता है। यहां 'शाक्त संप्रदाय' के अंतर्गत शक्ति को ही सर्वोच्च सत्ता के रूप में पूजा जाता है। भारत में मां दुर्गा, काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रूपों में शक्ति का त्रिविध स्वरूप आकर्षण, ऐश्वर्य और ज्ञान पूजनीय है। वर्ष में दो बार आने वाले 'नवरात्रि' के पावन अवसर पर नौ दिनों तक आदिशक्ति के नौ अलग-अलग रूपों (शैलपुत्री से लेकर सिद्धिदात्री तक) की पूजा की जाती है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, तिब्बत और श्रीलंका में फैले 51 शक्तिपीठ शक्ति पूजा के भौगोलिक और आध्यात्मिक विस्तार का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। शक्ति पूजा की व्यापकता पूरी दुनिया में प्राचीन काल से आज भी विद्यमान है।

प्राचीन मिस्र में 'आइसिस' और 'सेखमेट' की आराधना: यदि हम प्राचीन वैश्विक सभ्यताओं की ओर रुख करें, तो नील नदी की घाटी (मिस्र) में


मिस्र सभ्यता की देवी 'आइसिस'

शक्ति पूजा का एक बेहद समृद्ध इतिहास मिलता है। मिस्र की सभ्यता में देवी 'आइसिस' को मातृत्व, जादू और जीवन के पुनर्जन्म की परम देवी माना जाता था, जिसकी तुलना भारतीय संस्कृति की मां पार्वती से की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, युद्ध और विनाश की उग्र देवी 'सेखमेट' का स्वरूप भारतीय परंपरा की मां काली से हूबहू मेल खाता है। सिंह के मुख वाली देवी सेखमेट को न्याय और संहार की शक्ति माना जाता था, जो बुरी ताकतों से ब्रह्मांड की रक्षा करती थीं।

ग्रीक (यूनानी) सभ्यता में देवियों का महातम्य: यूनान के प्राचीन दर्शन और पौराणिक कथाओं में भी स्त्री शक्ति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ग्रीक पौराणिक कथाओं में देवी 'अथेना' को बुद्धि, ज्ञान और युद्ध की रणनीति की देवी माना गया है, जो मां सरस्वती और मां दुर्गा के मिले-जुले स्वरूप को दर्शाती हैं। इसी प्रकार, प्रकृति, जंगली जीवों और प्रसव की देवी 'आर्टेमिस' और पृथ्वी माता के रूप में पूजी जाने वाली देवी 'डेमेटर' (जिन्हें हम मां शाकंभरी या अन्नपूर्णा कह सकते हैं) की पूजा यूनानी समाज में अनिवार्य रूप से की जाती थी। ओलंपिक खेलों की शुरुआत भी कहीं न कहीं इन शक्तियों के सम्मान से जुड़ी थी।

मेसोपोटामिया सभ्यता में प्रेम-युद्ध की देवी इश्तार: दजला और फरात नदियों के किनारे विकसित हुई मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक और सीरिया) की प्राचीन सुमेरियन और बेबीलोनियन सभ्यताओं में देवी 'इन्नाना' या 'इश्तार' की पूजा का व्यापक प्रचलन था। इश्तार को प्रेम, सौंदर्य, उर्वरता के साथ-साथ युद्ध की भी देवी माना जाता था। शेर की सवारी करने वाली देवी इश्तार का यह हिंसक और ममतामयी दोहरा स्वरूप बिल्कुल भारतीय सिंहवाहिनी मां दुर्गा जैसा ही है। यह इस बात का ऐतिहासिक साक्ष्य है कि मानव सभ्यता के शुरुआती दौर में भी शक्ति को एक योद्धा और रक्षक के रूप में ही देखा गया।

चीन-जापान में गुआन यिन और अमातेरासु: पूर्वी एशिया की बौद्ध और शिंतो परंपराओं में भी शक्ति पूजा ने अपना स्वरूप बदला लेकिन अपनी मूल भावना को बनाए रखा। चीन में 'गुआन यिन' को करुणा, दया और मातृत्व की देवी के रूप में पूजा जाता है। यद्यपि वे बौद्ध परंपरा से जुड़ी हैं, लेकिन आम जनमानस में उनका स्थान एक रक्षक माता का ही है। वहीं जापान की पारंपरिक शिंतो संस्कृति में


चीन में बौद्ध परंपरा की देवी गुआन यिन

'अमातेरासु' को सूर्य की देवी और संपूर्ण ब्रह्मांड की निर्मात्री माना गया है। जापानी शाही राजवंश स्वयं को सूर्य देवी अमातेरासु का वंशज मानता है, जो यह साबित करता है कि वहां राजसत्ता की शक्ति का स्रोत भी एक महिला देवी ही हैं।

अमेरिका में माया और एज्टेक की प्रकृति पूजा: कोलंबस के अमेरिका पहुंचने से बहुत पहले, वहां की समृद्ध माया और एज्टेक सभ्यताओं में प्रकृति को ही शक्ति का जीवंत रूप मानकर पूजा जाता था। एज्टेक सभ्यता में 'कोटलीक्यू' को जीवन और मृत्यु की देवी, यानी 'धरती माता' के रूप में पूजा जाता था। उनका स्वरूप भी स्कंदमाता और काली के समान उग्र और सृजनात्मक था। वहीं माया सभ्यता में 'इशचेल' को चंद्रमा, चिकित्सा और बुनाई की देवी माना जाता था। इन संस्कृतियों में फसल कटाई के समय मातृ शक्ति को धन्यवाद देने के लिए बड़े उत्सव मनाए जाते थे, जो हमारे यहां की 'नवान्न' या 'लोहड़ी', 'पोंगल' परंपरा जैसी ही है। *

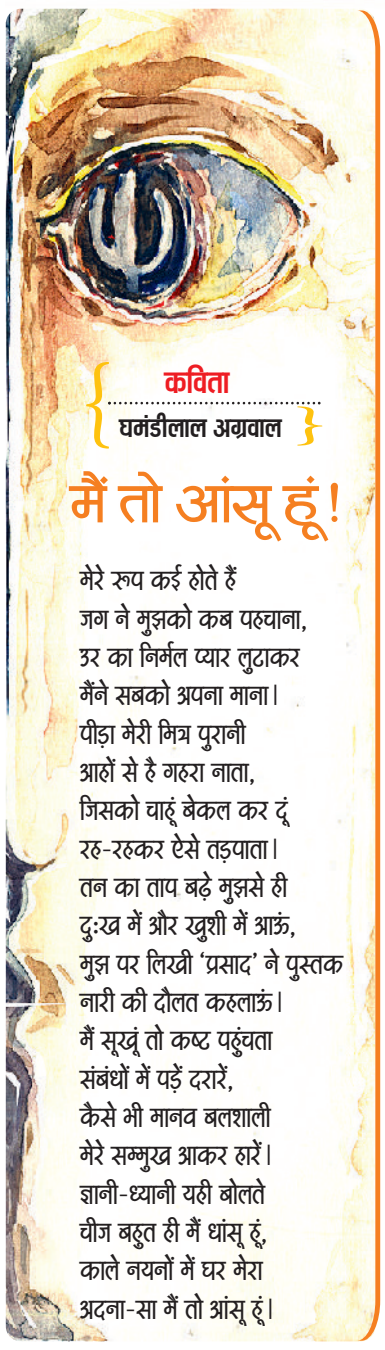

कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मैं तो आंसू हूं!

मेरे रूप कई होते हैं
जग ने मुझको कब पहचाना,
उर का निर्मल प्यार लुटाकर
मैंने सबको अपना माना।
पीड़ा मेरी मित्र पुरानी
आहों से है गहरा नाता,
जिसको चाहूं बेकल कर दूं
रह-रहकर ऐसे तड़पाता।
तन का ताप बढ़े मुझसे ही
दुःख में और खुशी में आऊं,
मुझ पर लिखी 'प्रसाद' ने पुस्तक
नारी की दौलत कहलाऊं।
मैं सूखूं तो कष्ट पहुंचता
संबंधों में पड़ें दरारें,
कैसे भी मानव बलशाली
मेरे सम्मुख आकर हारें।
ज्ञानी-ध्यानी यही बोलते
चीज बहुत ही मैं धांसू हूं,
काले नयनों में घर मेरा
अदना-सा मैं तो आंसू हूं।

व्यंग्य / डॉ. यशोधरा भटनागर

दोस्ती का डेटा पैक



हम बड़े भाग्यशाली समय में जी रहे हैं, जब हमारे पास दोस्तों की कोई कमी नहीं हैं। हमारे इतने दोस्त हैं कि हम खुद भूल जाते हैं कि आखिर हम किसके दोस्त हैं और कौन हमारा? भाग्यशाली समय की हर सुबह अपने दोस्तों से मिलने के साथ शुरुआत होती है और वो भी घर बैठे। मोबाइल उठाया अंगुली से स्क्रीन पर हल्का-सा स्पर्श किया, दोस्ती की दुनिया खुल जाती है। हजारों दोस्त एक साथ कतार में खड़े मिलते हैं। अब पुराने जमाने की तरह चाय पिलाने, हाल-चाल पूछने, या दुःख-सुख बांटने की कोई झंझट नहीं। यहां सब काम लाइक और इमोजी से चल जाता है।

पहले दोस्ती का मतलब था, आप बीमार पड़ें तो कोई दवा ला दे। अब दोस्ती का मतलब है, आप बीमार पड़ें तो सौ लोग लिख दें 'गेट वेल सून।' लिखने वाला इस परम विश्वास से संदेश भेजता है कि यह वाक्य दवा और दुआ से भी ज्यादा प्रभावी तरीके से काम करेगा। लिखने वाले भी निश्चिंत हो जाते हैं कि उसने दोस्ती का फर्ज अदा किया। मोबाइल में इतने 'गेट वेल' बरसते हैं कि बीमारी भी ठिठककर सोचती है। यहां दर्द असली है, या महज रस्म अदायगी है?

अब यह नई संवेदना है, जिसमें आदमी घर से नहीं निकलता, पर भावनाएं पूरी तरह आउटसोर्स कर देता है। भावनाएं डाक से नहीं, डेटा से जाती हैं और कभी-कभी 'डिलीवर' भी नहीं होतीं। इतनी फर्ज अदायगी के बाद अगर मरीज स्वस्थ हो जाए तो ठीक, नहीं तो अगली पोस्ट 'ओम शांति' की तैयारी है। सोशल मीडिया ने दोस्ती को बहुत लोकतांत्रिक बना दिया है। अब आप किसी को जानते हों या न जानते हों, दोस्ती हो सकती है। मेरे एक परिचित हैं, जो हर सुबह कई सौ लोगों को 'गुड मॉर्निंग' भेजते हैं। मैंने पूछा, 'भैया क्या आप इन सबको जानते हैं?' वे बोले, 'नहीं, पर ये सब मेरे फ्रेंड्स हैं।' मैंने सोचा, अगर यही दोस्ती है तो मोहल्ले का किराना दुकानदार मेरा आत्मीय मित्र हुआ। कम से कम वह हर महीने उधार का हिसाब पूछते समय मेरा चेहरा तो पहचान लेता है। इन ऑनलाइन दोस्तों की तरह सिर्फ डी.पी. वाला चेहरा ही नहीं पहचानता। अब आदमी के जीवन में दोस्ती का नए पैमाने, नए मापदंड बन गए हैं-लाइक्स। जिसकी पोस्ट पर ज्यादा लाइक, वह ज्यादा लोकप्रिय। लोग फोटो डालते हैं। कभी कॉफी के कप के साथ, कभी जिम में पसीना बहाते हुए, कभी पहाड़ों में मुस्कुराते हुए और नीचे सैकड़ों लोग लिख देते हैं। 'वाह!' या फिर 'कमाल है!'

हमें तो कभी-कभी लगता है कि अगर न्यूटन आज होते तो वे गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत नहीं खोजते, बल्कि यह खोजते कि पोस्ट पर लाइक किस तरह और किस गति से गिरते हैं? ऑनलाइन दोस्ती की एक और खूबी है। यहां हर आदमी बहुत खुश दिखाई देता है। कोई लिख रहा है, 'लाइफ इज ब्यूटीफुल।' कोई लिख रहा है, 'फीलिंग ब्लेस्ड।' जबकि उसी आदमी की असली जिंदगी में बिजली का बिल, बच्चों की फीस और बॉस की डांट उसकी प्रतीक्षा कर रही होती है। पर इन सब चिंताओं के बीच फुर्सत पाते ही वह एक नई फोटो डाल देता है, मानो हर समस्या हल हो गई। एक दिन हमने अपने मोहल्ले के गुड्डू से यूं ही पूछ लिया, 'भैया तुम्हारे कितने दोस्त हैं?'

'पूरे चार हजार आठ सौ। पांच हजार में दो सौ कम।' उसने बड़े गर्व के साथ मुस्कुराते हुए जवाब दिया। हमने कहा, 'अच्छा है, फिर तो तुम्हें कभी अकेलापन नहीं लगता होगा।''नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं। अकेलापन अपनी जगह है। रात को मोबाइल बंद होता है, तो दोस्ती भी 'स्लीप मोड' में चली जाती है। छत की ओर एकटक देखते हुए सोचता हूं, 'इतने सारे दोस्त हैं, पर बात किससे करूं?' उसकी बात सुनकर हम सोचने लगे। इतने दोस्तों के होते हुए भी अकेलापन?' क्योंकि दोस्ती में अब मेहनत नहीं है। मित्रों, दोस्ती का नया ज्ञान और विज्ञान यह है कि डिजिटल की दोस्ती भी बड़ी प्रगतिशील हो गई है। न इंतजार है, न रूठना है, न मनाना है। बस अंगूठा चलाना है। और दोस्त पसंद न आए तो ब्लॉक कर अंगूठा दिखाना है। संवेदनाएं शब्दों की मोहताज हो गईं हैं और भावनाओं ने इमोजी की शक्ल अख्तियार कर ली है। *

लघुकथा / सूर्यदीप कुशवाहा

कच्ची दीवार

अनन्या एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत थी। उसकी कार्यक्षमता, अनुशासन और टीम के नेतृत्व करने की काबिलियत का हर कोई कायल था। इस वर्ष ऑपरेशंस हेड का पद खाली होने वाला था और अनन्या अपनी योग्यता के आधार पर इसकी सबसे प्रबल दावेदार थी। उसी विभाग में राहुल भी मैनेजर था। राहुल काम में औसत था, लेकिन उसकी नेटवर्किंग और ऑफिस के पुरुष सहयोगियों के साथ शाम की पार्टियों में उपस्थिति उसे मैनेजमेंट की नजरों में बनाए रखती थी।

पदोन्नति के इंटरव्यू का दिन आया। अनन्या ने पिछले तीन वर्षों के अपने शानदार रिकॉर्ड, कंपनी के बढ़ते हुए प्रॉफिट और टीम की सफलता का पूरा डेटा प्रस्तुत किया। दूसरी ओर, राहुल का प्रस्तुतीकरण सामान्य था। इंटरव्यू बोर्ड के मुख्य सदस्य मिस्टर खन्ना ने अनन्या से एक ऐसा सवाल पूछा, जो शायद ही किसी पुरुष उम्मीदवार से पूछा जाता। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'अनन्या, आपका काम तो बेहतरीन है, लेकिन पता चला है कि आप फैमिली प्लानिंग के बारे में सोच रही हैं। यह पोस्ट तो बहुत जिम्मेदारी वाला है, ऐसे में क्या आप फैमिली के साथ ऑफिस की नई जिम्मेदारियां संभाल पाएंगी?' यह सवाल सुनकर अनन्या सन्न रह गई। उसकी योग्यता पर उसकी व्यक्तिगत जीवन को भारी माना जा रहा था। कुछ दिनों बाद घोषणा की गई कि राहुल को ऑपरेशंस हेड बना दिया गया। कारण बताया गया कि राहुल ज्यादा फ्लेक्सिबल है और जरूरत के समय उपलब्ध रह सकता है। यह अधिकतर कार्यालयों में व्याप्त उस ग्लास सीलिंग का जीवंत उदाहरण था, जहां महिलाओं को उनकी क्षमता के बजाय उनकी सामाजिक भूमिकाओं के तराजू में तौला जाता है। लेकिन अनन्या ने हार नहीं मानी। उसने एचआर विभाग में निष्पक्ष समीक्षा की मांग की और अपनी परफॉर्मेंस के आंकड़ों के साथ औपचारिक शिकायत दर्ज कराई।



उसने साफ शब्दों में कहा, 'प्रतिबद्धता और काबिलियत का पैमाना जेंडर नहीं, बल्कि रिजल्ट होना चाहिए।' अनन्या के साहस ने दबे स्वर में बात कर रही अन्य महिला सहकर्मियों को भी प्रेरित किया। मामला मुख्यालय तक पहुंचा और जांच में पाया गया कि राहुल का चयन पक्षपातपूर्ण था।

अंततः प्रबंधन को अपनी गलती सुधारनी पड़ी। अनन्या को न केवल वह पद मिला, बल्कि कंपनी ने नई नीतियां लागू कीं ताकि भविष्य में किसी भी महिला की योग्यता को उसके घरेलू भविष्य के अनुमानों से न आंका जाए। अब असमानता की कच्ची दीवार टूट गई थी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी कविताएं

पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर अदिति सक्सेना के भीतर एक कवि मन भी है। इसको प्रमाणित करता है हाल में छपकर आया उनका पहला कविता संग्रह-खो गए हम कहां। इसमें अपने आस-पास की दुनिया के साथ ही देश और पूरी मनुष्यता के प्रति उनकी संवेदनशीलता प्रकट होती है। इस लिहाज से 'बंटवारा' कविता को पढ़ा जा सकता है। कुछ ऐसे ही भाव 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' कविता में भी प्रकट हुए

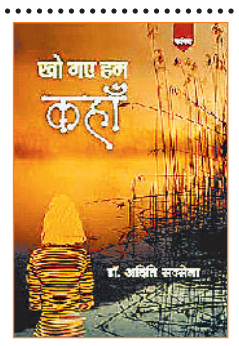

हैं तो कवयित्री को अपने देश के जांबाज सैनिकों पर भी गर्व है। इसे उन्होंने ओजस्वी शब्दों में 'हमारे वीर वायु योद्धा' में व्यक्त किया है। इन सबके साथ पुरुष प्रधान समाज में एक स्त्री को किस तरह हमेशा डरे-सहमे रहने को विवश होना पड़ता है, इस त्रासदी को बहुत मार्मिकता के साथ अदिति ने 'बलात्कार' कविता में शब्दबद्ध किया है। इसी तरह संग्रह की अनेक कविताओं में जीवन और समाज की तमाम विसंगतियों, विडंबनाओं के काव्यात्मक चित्र देखे जा सकते हैं। *

पुस्तक: आ गए हम कहां (कविता संग्रह), **लेखिका:** डॉ. अदिति सक्सेना, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** भावना प्रकाशन, दिल्ली

द्वीपीय जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता

अंडमान-निकोबार का कोकोनट कार्निवल



नारियल की खुशबू, समुद्री लहरों की हरहराती आवाज और स्थानीय संस्कृति के विविध रंग, अंडमान और निकोबार द्वीप का कोकोनट कार्निवल इन सबको एक साथ समेटता है। हर वर्ष आयोजित होने वाला यह उत्सव, नारियल के बहाने इन द्वीपों के खान-पान, परंपरा, कला और संस्कृति से भी रूबरू कराता है।

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

समुद्र के बीच में बसे द्वीपों की अपनी एक अलग भाषा होती है। रास्तों के किनारे झूमते नारियल के पेड़ किसी स्वागत द्वार की तरह लगते हैं और दूर तक फैला नीला पानी यह एहसास करा देता है कि भारत की भौगोलिक कहानी सिर्फ पहाड़ों, मैदानों और रेगिस्तान तक ही सीमित नहीं है। अंडमान-निकोबार पहुंचकर नजर जब नारियल के पेड़ों पर ठहरती है, तो समझ में आता है कि यहां नारियल महज एक फल या पेड़ नहीं बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी, खानपान और स्थानीय अर्थव्यवस्था का हिस्सा भी है। इस रिश्ते को उत्सव में बदल देता है यहां का कोकोनट कार्निवल, जो इस साल 17 से 18 अक्टूबर 2026 को आईटीएफ ग्राउंड, विजय पुरम पोर्ट ब्लेयर में आयोजित होगा।

द्वीपीय जीवनशैली को करीब से देखने का मौका

अंडमान-निकोबार में हर साल अक्टूबर माह में आयोजित होने वाला यह यह पारंपरिक मेला, अपना एक अलग ही चुंबकीय आकर्षण रखता है। इस मौके पर यहां आने वाले पर्यटकों को इन द्वीपों की असली जीवनशैली को करीब से देखने का मौका मिलता है। नारियल से बने खाद्य पदार्थ, स्थानीय उत्पाद, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और स्थानीय स्वाद, सब मिलकर इसे सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं बल्कि अंडमान की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान की झलक बना देते हैं। सैलानियों के लिए किसी जगह की असली खूबसूरती उसके प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों से आगे शुरू होती है। समुद्र तटों की तस्वीरें तो हर पर्यटक खींचता है, लेकिन उन समुद्र तटों के आस-पास रहने वाले लोगों का जीवन कैसा है, वे क्या खाते हैं, क्या बनाते हैं और अपनी प्राकृतिक संपदा को किस तरह देखते हैं? इस सबको जानना यात्रा को एक अनोखा अनुभव बना देता है।

समझ आती है नारियल की बहुपयोगिता



यहां पहुंचकर लोगों को पता चलता है कि नारियल सिर्फ मंदिर में चढ़ाने या कुछ मिठाईयों में इस्तेमाल होने तक सीमित नहीं है। इसकी उपयोगिता की बहुत लंबी-चौड़ी लिस्ट है। इसका पानी हमारी प्यास बुझाता है। इसकी गिरी हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती है। इसका तेल खान-पान से लेकर दूसरे घरेलू कामों में इस्तेमाल होता है, जबकि इसकी जटा और खोल से कई तरह के उपयोगी उत्पाद बनाए जाते हैं। द्वीपों में इसकी मौजूदगी इतनी स्वाभाविक है कि पर्यटकों को शायद पहली नजर में इसकी आर्थिक और सांस्कृतिक भूमिका का अंदाजा भी न हो। कोकोनट कार्निवल इसी रोजमर्रा की चीज को उत्सव के केंद्र में लाकर इसके महत्व को उजागर करता है।

अलग-अलग तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ

इस कार्निवल की एक और खूबी है, यहां पर बनाए जाने वाले विभिन्न व्यंजनों के लजीज स्वाद। अंडमान की यात्रा समुद्री भोजन के स्वाद के बिना अधूरी रहती है। स्थानीय भोजन में कई तरह के समुद्री खाद्य पदार्थों के साथ नारियल की संगति यहां देखते ही बनती है। नारियल आधारित चटनियां, करी और दूसरे स्थानीय व्यंजन यहां आने वाले पर्यटकों को उस स्वाद से परिचय कराते हैं, जो किसी होटल के सामान्य मेन्यू में नहीं मिलता। शाकाहारी यात्रियों के लिए भी यहां नारियल आधारित व्यंजनों की अपनी भरी-पूरी दुनिया है।

संस्कृति के विविध आयामों से परिचय

अंडमान-निकोबार कोकोनट कार्निवल, खान-पान के जरिए भी सैलानियों के सामने स्थानीय संस्कृति परोसता है। यहां की संस्कृति के विविध आयाम हैं, जो सदियों से रह रहे यहां के अनेक समुदायों की परंपराओं से मिलकर बनी है। स्थानीय संगीत और नृत्य, हस्तशिल्प तथा रोजमर्रा के जीवन से जुड़े उत्पाद, इस बात का एहसास कराते हैं कि द्वीपों की संस्कृति मुख्य भूमि से अलग होते हुए भी उसमें भारत की विविधता के चटक रंग घुले हुए हैं।

अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान

इस कोकोनट कार्निवल में आया कोई पर्यटक जब स्थानीय उत्पाद खरीदता है, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेता है या स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियां देखता है, तो इससे यहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था को कई तरह से लाभ पहुंचता है। इस तरह उत्सव पर्यटन को केवल होटल्स और दर्शनीय स्थलों तक सीमित रखने की बजाय उसे स्थानीय समुदायों से जोड़ देता है।

हर अनुभव होता है यादगार

सुबह समुद्र के किनारे सूर्योदय, दिन में द्वीपों की सैर और स्थानीय बाजारों की खोज तथा शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव। कोकोनट कार्निवल के समय यहां आने वाले पर्यटक अपनी आंखों में सिर्फ अंडमान-निकोबार द्वीप की खूबसूरती ही नहीं ले जाते बल्कि इस सांस्कृतिक अनुभव को भी ले जाते हैं, जो जीवन भर उनके मन में यहां की याद ताजा बनाए रखता है। कोकोनट कार्निवल की सबसे खूबसूरत बात यही है कि यह किसी पर्यटन अनुभव की नकल करने की बजाय स्थानीय जीवन के साधारण चीज को उत्सव में बदल देता है। एक नारियल के बहाने, प्रकृति, भोजन, रोजगार, हस्तशिल्प, लोकसंस्कृति और पर्यटन, सब एक ही फ्रेम में दिखाई देने लगते हैं। *

रखें इन बातों का ध्यान

किसी भी द्वीपीय पर्यटन की तरह यहां भी जिम्मेदाराना पर्यटन बहुत जरूरी है। अंडमान-निकोबार के समुद्र तट इसलिए भी लोगों को आकर्षित करते हैं, क्योंकि ये साफ-सुथरे हैं। ऐसे में यह पर्यटकों की जिम्मेदारी भी बनती है कि ये साफ-सुथरे समुद्र तट, बाकी सैलानियों के लिए भी ऐसे ही बने रहें, इसलिए प्लास्टिक कचरा न फैलाना, समुद्री और तटीय पारिस्थितिकी का सम्मान करना, स्थानीय समुदायों और उनकी परंपराओं की तस्वीर या वीडियो लेने से पहले अनुमति लेना, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना जैसी बातों का पालन करें। भले ये छोटी बातें लगती हों, लेकिन संवेदनशील द्वीपों के लिए इनका बड़ा महत्व है।

सफल और समृद्ध जीवन की कामना हम सभी करते हैं। इसे हासिल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए आपके व्यक्तित्व और व्यवहार में कुछ विशेष गुणों का होना जरूरी है। इस बारे में जानिए।

आपको सफल-समृद्ध बनाएंगी

व्यक्तित्व की खूबियां-आदतें

सक्सेस मंत्र
नेहा जैन



किसी ने क्या खूब कहा है, दौलत तिजोरी या बैंक खाते में आने से पहले सोच में जन्म लेती है। यानी सफल और समृद्ध होने के लिए हमारी सोच और व्यक्तित्व में कुछ आदतों का शामिल होना जरूरी है।

खुद पर भरोसा: हर बड़ी उपलब्धि की शुरुआत तालियों से नहीं होती। कई बार शुरुआत संदेह और उपहास से होती है। असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वाले लोगों में अपने विचार और अपनी क्षमता पर एक मजबूत विश्वास दिखाई देता है। इसका मतलब यह नहीं कि वे हर समय सही होते हैं। बल्कि वे गलत होने की संभावना के बावजूद कोशिश करने का साहस रखते हैं। आत्मविश्वास का सही अर्थ है- 'मुझे सब कुछ नहीं आता, लेकिन मैं सीख सकता हूं।' यही सोच नया व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करती है।

भविष्य का सही अनुमान लगाने की आदत: आम लोग व्यवसाय के लिए देखते या विचार करते हैं कि आज बाजार में क्या चल रहा है? लेकिन असाधारण सोच वाला व्यक्ति सोचता है कि कुछ वर्षों बाद लोग क्या चाहेंगे? बाजार में किस उत्पाद या सेवा की मांग होगी। यही फर्क कई बार विचार और नवाचार के बीच होता है। तकनीक बदल रही हैं, लोगों की आदतें बदल रही हैं, काम करने के तरीके बदल रहे हैं- इन बदलावों को समझकर आगे की तैयारी करना दूरदृष्टि है।



आलोचना से बेपरवाह: जैसे ही आप कुछ नया करेंगे, राय देने वाले लोग मिल जाएंगे। कोई कहेगा, 'यह तुम्हारे बस का नहीं।' कोई कहेगा, 'इसमें पैसा नहीं है।' कोई आपके पुराने अनुभवों का हवाला देकर आपको रोकने की कोशिश करेगा। आलोचना से भागना नहीं चाहिए। लेकिन हर राय को दिल और दिमाग पर नहीं लेना चाहिए। इस विषय में सुलझा हुआ तरीका है सलाह सुनो, उसके तथ्य जांचो, उपयोगी बात अपनाओ और अंतिम निर्णय सोच-समझकर खुद लो।

बेहतर बनने की भूख: असाधारण लोग केवल सफलता पाने की इच्छा नहीं रखते। वे अपने काम में उत्कृष्टता की तलाश करते रहते हैं। यह मानसिकता दूसरों को हराने की तुलना में कहीं अधिक उपयोगी है। यह सूत्र लंबे समय में असाधारण परिणाम दे सकता है।

वर्तमान सुख के बदले बड़ा लक्ष्य: मान लीजिए आपके सामने दो विकल्प हैं अभी दो घंटे मोबाइल पर मनोरंजन या वही दो घंटे किसी जरूरी कौशल को सीखने में लगाना। तुरंत मिलने वाला सुख आकर्षक होगा। लेकिन भविष्य का लाभ अकसर कम दिखाई देता है। इसीलिए आत्म-अनुशासन इतना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब जीवन से आनंद खत्म करना नहीं है। इसका अर्थ है यह समझना कि हर इच्छा को तुरंत पूरा करना जरूरी नहीं।

पैसे की बचत जरूरी: सफल-समृद्ध लोग जानते हैं कि धन का अर्थ केवल अधिक कमाना नहीं है। धन को संभालना, बचाना और समझदारी से उपयोग करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति आय बढ़ा सकता है, लेकिन यदि उसका पूरा पैसा अनियोजित खर्च हो जाए तो आर्थिक सुरक्षा नहीं बनती। यानी पैसे को केवल उपभोग में खत्म करने के बजाय उसे भविष्य के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

जिम्मेदारी स्वीकार करना: जीवन में बहुत कुछ हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। बाजार, मौसम, दूसरे लोगों के फैसले और कई परिस्थितियां हमारे हाथ में नहीं होतीं। साथ ही आपको समझना चाहिए कि हर परिस्थिति में कुछ न कुछ ऐसा जरूर होता है, जिस पर हमारा नियंत्रण रहता है जैसे-हमारी तैयारी, हमारा व्यवहार, हमारा अगला कदम। यही जिम्मेदारी की भावना व्यक्ति को निष्क्रिय शिकायत से सक्रिय प्रयास की ओर ले जाती है।

सीमित जोखिम लेना: सफलता की कहानियां अकसर जोखिम से जुड़ी होती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि सफल व्यक्ति आंख बंद करके जोखिम लेते हैं। समझदारी यह है कि जोखिम और संभावित लाभ दोनों को देखा जाए। किसी नई स्किल को सीखने में समय लग सकता है, लेकिन वह वर्षों तक उपयोगी हो सकती है। कोई नया व्यवसाय शुरू करने से पहले बाजार, पूंजी, मांग और संभावित नुकसान समझना जरूरी है। *

हालांकि पान मूल रूप से भारतीय पौधा नहीं है। लेकिन इसकी पहचान प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है। पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक संदर्भों, पूजा-पाठ से लेकर औषधि और सामाजिक प्रतिष्ठा के तौर पर इसका उपयोग किया जाता रहा है।

प्राचीन काल से बरकरार है

भारतीय संस्कृति में पान की शान

संस्कृति
शाहिद ए. चौधरी





पान के पत्ते को लेकर रामकथा में सुंदर प्रसंग का वर्णन मिलता है। भगवान श्रीराम का संदेश लेकर जब हनुमानजी लंका की अशोक वाटिका में पहुंचे तो संदेश पाकर माता सीता अत्यधिक प्रसन्न हो गईं और वह इसके लिए हनुमानजी को कोई उपहार देना चाहती थीं, लेकिन उन्हें आस-पास कोई फूल नहीं मिला। तब उन्होंने पास के एक पौधे से ताजा पत्ते तोड़े और उनको आपस में गूंथकर, आशीर्वाद के साथ हनुमानजी को प्रदान किया। वह पौधा पान का था। चूंकि यह प्रेमाशीष माता सीता से उन्हें मिला था, इसलिए हनुमानजी के लिए पान के पत्ते अति प्रिय हो गए, विशेषकर इसलिए कि यह सम्मान, शुद्धता व नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं। मान्यता है कि तभी से पूजा के दौरान जब हनुमानजी को पान के पत्ते या उनकी माला को अर्पित किया जाता है, तो वे अति प्रसन्न हो जाते हैं क्योंकि इससे उन्हें माता सीता के आशीष की याद आ जाती है। इससे हनुमानजी भक्त को सुख, अच्छी सेहत के आशीर्वाद के अतिरिक्त उसके समक्ष आने वाली बाधाएं भी दूर कर देते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में वर्णन: पान, जिसे तंबुला भी कहते हैं, का उल्लेख प्राचीन संस्कृत, तमिल साहित्य और पांचवीं शताब्दी के कालिदास के लेखन में भी मिलता है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता में पान की तारीफ करते हुए बताया गया है कि यह पाचन में मदद करता है, श्वास में ताजगी लाता है और शरीर के दोषों को संतुलित करता है। कामसूत्र में कहा गया है कि पान चबाने से पौरुष में वृद्धि होती है। इस पृष्ठभूमि में पान का भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा बनना स्वाभाविक था और वह भी इस सीमा तक कि प्राचीन व मध्ययुग की हिंदू रियासतों (जैसे कन्नौज) में राजा के हाथों से पान हासिल करना बहुत बड़ा शाही सम्मान माना जाता था। स्वागत व विदाई में पान के पत्तों की संख्या से हैसियत मालूम होती थी- राजा को 32 पान, राजकुमार को 24 पान, ज्ञानी को 12 पान और साधारण व्यक्ति को 4 पान प्रदान किए जाते थे। औपचारिक समारोह में मेजबान दोनों हाथों से पान पेश करता था। दूसरों के सामने पान खाना और उन्हें पेश न करना अभद्रता में शुमार होता था। प्रतिद्वंदी से पान लेने के लिए मजबूर होना अपमान का घूंट पीना था। महिला द्वारा पुरुष को पान देना उसे आमंत्रित करना था।

इतिहास में मिलते हैं संदर्भ: दिलचस्प बात यह है कि पान, भारतीय पौधा नहीं है। यह इंडोनेशिया के द्वीपों व मलय प्रायद्वीप से पानी के व्यापारी जहाजों के जरिए भारत आया। कर्नाटक के बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर (जिसका निर्माण 12वीं शताब्दी में होयसल राजवंश ने कराया था) की बाहरी दीवारों पर एक महिला को पान के पत्ते लिए हुए दर्शाया गया है, जिससे मालूम होता है कि पान को भारत में सदियों पहले स्वीकृति मिली और अब कोई हिंदू समारोह इसके बिना पूर्ण नहीं होता है।

तमिल संगम कविता 2,000 वर्ष पुराने संसार को बयान करती है जो पान से परिचित थी। पातिप्पलाई कविता में पुहार के व्यस्त बाजारों का वर्णन है, जहां पान के पत्ते बेचे जाते थे। मदुरैकांची कविता में पान की खेती व बिक्री का जिक्र मिलता है, जबकि कुसुंटोकाई कविता में बताया गया है कि छाली के साथ पान पेश करना मेजबानी व प्रेम का प्रतीक माना जाता था। असम में मेहमान को सबसे पहले छालियां या सुपारी पेश की जाती थीं। भूटान में जब भी दो लोग मिलते तो 'डोमा ज्हेस' (कृपया पान व छाली लें) कहते।

मुगलकाल में पान का सेवन ललित कला के स्तर तक पहुंच गया। चांदी व सोने के पानदान कुलीन जीवन का आवश्यक अंग बन गए। यूरोपीय यात्रियों जैसे थॉमस रो ने लिखा है कि बादशाह जहांगीर के अपने पानदान से पान मिलना जबरदस्त राजनयिक सम्मान का प्रतीक था। दिल्ली व लखनऊ के नवाबी दौर में पान शेर-ओ-शायरी, संगीत व तवाइफों की तहजीब का हिस्सा बन गए। ब्रिटिशकाल में पान का कुलीन सांस्कृतिक स्टेटस कम होने लगा। ब्रिटिश प्रशासनिक व सेनेटरी दृष्टिकोण के तहत पान को 'गंदी देशज प्रथा' के रूप में देखा जाने लगा। छाली व तंबाकू युक्त पान खाने की आदत को मुंह व गले के कैंसर से जोड़ा जाने लगा। लेकिन इस 'कोलोनियल कलंक' के बावजूद पान खाने का सिलसिला जारी रहा।

बरकरार है रुतबा: आज भी रोजमर्रा के स्ट्रीट फूड के रूप में (देश के लगभग हर शहर में आपको पनवाड़ी की दुकान मिल जाएगी), खाने के बाद हाजमे के लिए और मेहमाननवाजी के तौर पर शादियों, उत्सवों व समारोह में। पहले जहां सिर्फ तीन किस्म के पान खाए जाते थे- मीठा पान (गुलकंद, तिल, नारियल आदि युक्त), सादा पान (सिर्फ कत्था, चुना व छाली सहित) व जर्दा पान (तंबाकू सहित) तो अब चॉकलेट, फ्रूट-फ्लेवर, फायर पान आदि भी आ गए हैं। *

शायरों की नजर में पान का अंदाज



'जब हम-कलाम हम से होता है पान खाकर/किस रंग से करे है बातें चबा-चबाकर।' मीर तकी मीर ने अपने इस शेर में फ्लर्ट करने के रोजमर्रा के पलों का शानदार नक्शा खींचा है, जिसमें प्रेमिका का पान खाना लालित्य व शरारत का माध्यम बन जाता है। पान चबाने से बोलना जानबूझकर धीमा, रंगीन, प्यारा व आकर्षण भरा हो जाता है। प्रेमी न सिर्फ शब्दों से मंत्रमुग्ध हो जाता है बल्कि इस वजह से भी कि हर 'चबाया' हुआ वर्ण शोखी में बदल जाता है। प्रेमिका के इस अंदाज से पान खाने पर मुसहफी गुलाम हमदानी कहते हैं- 'पान खाने की अदा ये है तो इक आलम को/खून रुलाएगी मिरी जान दहन-ए-सुर्ख तिरा।' लेकिन जब प्रेमिका अपने प्रेमी को पान देती है, तो असद अली खान कलक के शब्दों में यह होता है- 'होठों में दाब कर जो गिलौरी दी यार ने/क्या दांत पीसे गैरों ने क्या-क्या चबाए होंठ।' इसी विचार को अकबर इलाहाबादी ने इस तरह से कहा है- 'लगावट की अदा से उनका कहना पान हाजिर है/कयामत है सितम है दिल फिदा है जान हाजिर है।'

शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों में भक्ति गीत और भजनों का क्रेज रहा है। इनमें भी मां दुर्गा को समर्पित कई गीत तो बेहद लोकप्रिय हुए और आज भी उनकी लोकप्रियता बरकरार है। यहां कुछ ऐसे ही लोकप्रिय फिल्मी गीतों पर नजर डाल रहे हैं, जिनमें मां दुर्गा की महिमा का वर्णन या उनकी शक्ति का आह्वान किया गया है।

मां दुर्गा की महिमा से दमकते

हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीत

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश



फिल्म 'अवतार' का गीत 'चलो बुलावा आया है..'



फिल्म 'सुहाग' का गीत 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा'

धर्म का प्रतिनिधित्व करती हुई जब कोई फिल्म बनती है, तो उसे देखने के नए रिकॉर्ड बनते हैं और जब किसी फिल्म में चमत्कार होता है, तो वह उस फिल्म का हिट पक्ष बन जाता है। यूं तो लगभग हर देवी-देवता की बॉलीवुड फिल्मों में गीतों में स्तुति हुई है लेकिन उनमें से कुछ देवी-देवताओं पर अधिक गीत बनाए गए हैं। मां दुर्गा और उनके विभिन्न स्वरूपों का गुणगान, बॉलीवुड फिल्मों के गीतों में खूब किया जाता रहा है। कुछ फिल्में तो ऐसी हैं, जिनमें शामिल किए गए मां दुर्गा के एक गीत या भजन ने उस फिल्म को भरपूर लोकप्रियता प्रदान की। 'अवतार', 'आशा' और 'सुहाग' जैसी कई फिल्में इसका बेहतरीन उदाहरण हैं।

'अवतार' का 'चलो बुलावा आया है': फिल्म 'अवतार' वर्ष 1983 में जब आई तो इसकी कहानी ने दर्शकों के दिलों को स्पर्श कर लिया। राजेश खन्ना और शबाना आजमी ने इस फिल्म में ऐसे माता-पिता का रोल प्ले किया है, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। इसी में जब बच्चा अधिक बीमार होता है, तो दोनों माता वैष्णो देवी के दरबार में जाते हैं और वहां जो चमत्कार होता है, वही इस फिल्म का अहम हिस्सा बन जाता है। फिल्म में नरेंद्र चंचल, महेंद्र कपूर और आशा भोसले द्वारा गाया यह गीत 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है', आज भी घरों-मंदिरों में भक्ति-भाव से खूब गाया, सुना और बजाया जाता है। यह मां दुर्गा को समर्पित सबसे लोकप्रिय भक्ति गीतों में से एक है। शारदीय नवरात्र हो या चैत्र नवरात्र माताराणी का यह फिल्मी भजन अवसर को और भी भक्तिमय बना देता है। मां और दुर्गा मां को केंद्र में रखकर बुना गया यह गीत आज भी उतना ही लोकप्रिय है, जितना अपने रिलीज के वक्त हुआ था।



फिल्म 'क्रांतिवीर' का गीत 'जय अंबे जगदंबे मां..'

'आशा' का 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए': सन 1980 में आई फिल्म 'आशा', जितेंद्र, रीना राय और रामेश्वरी के अभिनय से सजी थी। इसमें भी नरेंद्र चंचल और मोहम्मद रफी द्वारा गाया भजन 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए,' खूब लोकप्रिय हुआ। आज चाहे माता वैष्णों के द्वार पर जाने वाले भक्त हों या फिर दूसरे सिद्धपीठों में मां के दर्शन को जाते भक्त, मार्ग से लेकर मंदिर तक, हर कहीं 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए, मैं आया मैं आया शेरा वालिए..' सुनाई पड़ता है। माता रानी के भक्त इसे भक्ति भावना के प्रदर्शन के साथ-साथ अपनी धार्मिक यात्रा की थकान मिटाने के लिए भी गाते हैं।

'सुहाग' का 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम': 1979 की फिल्म 'सुहाग' जब आई तो एंग्री यंग मैन का जमाना था। अमिताभ बच्चन, शशि कपूर तथा रेखा की इस फिल्म का गीत- 'हे नाम रे, सबसे बड़ा तेरा नाम, ओ शेरोंवाली, ऊंचे डेरों वाली, बिगड़े बना दे मेरे काम।' मोहम्मद रफी तथा आशा भोसले ने इसमें जो लय दी है, वह ही इसको ऑल टाइम हिट बना गई। मंदिरों से लेकर दुर्गा पंडालों तक में इसकी मधुर आवाज से भक्त रमे रहते हैं। सही बात तो यह है कि चाहे डांडिया हो या गरबा सभी में इसको खूब बजाया जाता है।



'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत 'मां शेरा वालिए'

नवरात्र पर केंद्रित कई अन्य गीत हुए लोकप्रिय: अलग-अलग दौर में आई कई अन्य फिल्मों में भी मां दुर्गा पर केंद्रित गीत रचे गए। इन गीतों ने भी खूब लोकप्रियता बटोरी। आज भी लोगों के दिलों में इन गीतों की खास जगह है। 'हम दिल दे चुके सनम' का 'ढोली तारो ढोल बाजे, ढोल बाजे ढोल बाजे, की धाम धाम बाजे ढोल...' भी डांडिया पंडालों में उतना ही लोकप्रिय है, जितना कि इस फिल्म में था। फिल्म 'क्रांति' का 'दुर्गा है मेरी मां, अंबे है मेरी मां' और 'क्रांतिवीर' का 'जय अंबे जगदंबे मां' भी कम प्रसिद्ध नहीं हुए। 'मर्द' में अनु मलिक तथा शब्बीर कुमार का गाया हुआ गीत 'मां शेरोंवाली' उस समय खूब चला, जब यह मूवी आई थी। 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत इसी से मिलता हुआ था 'मां शेरा वालिए, तेरा शेर आ गया।' फिल्मों से अलग हटकर देखें तो माता के जगराते में भी यही शक्ति केंद्र में रही। आज तक गैर फिल्मी जो सबसे अधिक पसंदीदा गीत बना वह है 'प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी।' इसे तो लोकगायकों ने भी गाया और फिल्मी गायक-गायिकाओं ने भी। 'अंबे तू है जगदंबे' को तो न जाने कितने गायकों ने गाया है और बॉलीवुड ने इसे कई बार दृश्य को एक नया मोड़ देने के लिए प्रयोग किया।

दर्शकों को खूब लुभाया इन गीतों ने: इस बात में संदेह नहीं कि माता दुर्गा के तमाम रूप हैं जिन्हें बॉलीवुड ने जब तब दर्शकों के सामने अलग-अलग गीतों के रूप में पेश किया। इसके लिए फिल्म की कहानी ऐसी रखी गई जिसमें एक भजननुमा गीत इसमें समाहित किया जा सके। कहानी भी ऐसी जिसे देखकर दर्शकों की आंखें नम हो जाएं। कुछ भजनों को इस तरह से तैयार किया गया कि वह डांडिया या गरबा में भी चलें और दुर्गा जागरण या सामान्य तौर पर भक्तों को भक्ति में रमा दें। कहने का सार यही है कि बॉलीवुड फिल्मों में मां शक्ति के विभिन्न रूपों को समर्पित खूब गीत रचे गए और ऐसे गीत खूब लोकप्रिय भी हुए। *